ॐनमः परमात्मने ।

श्रीशङ्कराचार्य्यप्रणीतः

तत्त्वबोधः ।

भाषानुवादटिप्पणीसहितः ।

खैरीगढ़राज्येश्वरी भारतधर्मलक्ष्मी
श्रीमती राणी सुरथकुमारी
देवी के द्वारा सम्पादित ।

श्रीभारतधर्म्ममहामण्डल प्रधान कार्य्यालय
से श्रीविश्वनाथअन्नपूर्णादानभाण्डार
द्वारा प्रकाशित ।

काशी ।

लखनऊ
मनोहरलाल भार्गव, बी. ए., के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के यन्त्रालय में छपा ।
सन् १९१८ ई०

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ॐ नमः परमात्मने ।

श्रीशङ्कराचार्य्यप्रणीतः

तत्त्वबोधः ।

भाषानुवादटिप्पणीसहितः ।

खैरीगढ़राज्येश्वरी भारतधर्मलक्ष्मी
श्रीमती राणी सुरथकुमारी
देवी के द्वारा सम्पादित ।

श्रीभारतधर्म्ममहामण्डल प्रधान कार्य्यालय
से श्रीविश्वनाथअन्नपूर्णादानभाण्डार
द्वारा प्रकाशित ।

काशी ।

लखनऊ
मनोहरलाल भार्गव, बी. ए., के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के यन्त्रालय में छपा ।
सन् १९१८ ई०

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सूचना

माननीया श्रीमती राणी साहिबा खैरीगढ़ ने अपने परमाराध्य श्रीगुरुदेव से तत्त्वबोध को श्रवण और मनन करके लोककल्याणार्थ इस ग्रन्थरत्न के प्रचार की इच्छा की अतः उनकी आज्ञानुसार इस ग्रन्थकी द्वितीयावृत्ति प्रकाशित की जातीहै और इस ग्रन्थका स्वत्वाधिकार काशीस्थ श्रीविश्वनाथ अन्नपूर्णा दानभाण्डारको दिया जाता है, जो सभा अनाथ दीन दरिद्रों की सेवा के लिये स्थापित की गई है। योग्य व्यक्तियों को यह ग्रन्थ निम्नलिखित स्थानों में पत्र भेजने पर विनामूल्य भी मिल सकेगा।

खैरीगढ़ राज्याश्रित
प्रेमपति शर्म्मा।

पते–

(१) श्रीमान् स्वामीदयानन्द बी. ए., सेक्रेटरी श्रीविश्वनाथ अन्नपूर्णा दानभाण्डार श्रीभारतधर्म्ममहामण्डल प्रधान कार्य्यालय–जगत्‌गंज बनारस।

(२) श्रीमान् कुँवर जंगबहादुरशाह रायबहादुर राज्य खैरीगढ़ सिंघाई।
(ज़िला खीरी, लखीमपुर; अवध)

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

तत्त्वबोध।

प्रस्तावना ।

ज्ञानानन्दं परमसुखदं
केवलं ब्रह्ममूर्त्तिम्,
द्वन्द्वाऽतीतं गगनसदृशं
तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं
सर्व्वधीसाक्षिभूतम्,
भावाऽतीतं त्रिगुणरहितं
सद्गुरुं तं नमामि ॥

ज्ञानानन्दस्वरूप, परमानन्द के देनेवाले, साक्षात् मूर्त्तिमान् ब्रह्म, सुख-दुःखादि द्वन्द्वों से अतीत, आकाशवत् सर्व्वव्यापक, तत्त्वमसि आदि महावाक्यों से जानने योग्य, अद्वितीय, नित्य, सर्व्वदोषरहित, अपरिणामी, सब प्राणियों की बुद्धि के

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

साक्षीरूप, त्रिभावों से अतीत और त्रिगुणों से रहित जो श्रीसद्गुरु हैं उनको प्रणाम है।

जीव को अपने प्राणनाथ से बिछुड़े हुए बहुत दिन बीत गये। अपने हृदयविहारी प्राणनाथ से बिछुड़े हुए कितने दिन बीत गये? जीवलोक में इसका पता नहीं चल सक्ता। अपने परम प्रिय से बिछुड़ना ही जीव के सकल दुःखों का मूल है। मृगमरीचिका भान की नाईं और रज्जु में सर्प ज्ञान की नाईं जीव नाशवान् संसाररूप भ्रमजाल में फँसकर घोर क्लेश पाता है। अज्ञानी जीव अघटनघटनापटीयसी माया के अज्ञानजाल में फँसकर नाशवान् वैषयिक पदार्थों में सुख मानकर और अनात्मीय पुत्र कलत्र मित्रादि में भ्रमात्मक आत्मीयता स्थापन करता हुआ न जाने कितना दुःख उठाता है। निज मनोमन्दिरविहारी सर्व्वजीवहितकारी हृदयनाथ के चरणों के नित्यस्थायी परमानन्द को भूलकर अनित्य वैषयिक सुखों में यथार्थ आनन्द मानना ही इन सब विपत्तियों का मूल है। जब जीव का सत्प्रारब्ध उदय होता है तभी श्रीगुरुदेव के चरणों के

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

निकट बैठ कर संसार के त्रिताप से बचने का मार्ग जीव को दिखाई देने लगता है।

संसार पारावार से पार होने के लिये एकमात्र नौकास्वरूप श्रीगुरुदेव के उपदेश द्वारा ही यह निश्चय हुआ कि जीव का सत्कर्म्माऽनुष्ठानद्वारा अन्तःकरण शुद्ध होता है, उपासना के द्वारा श्रीभगवान् की कृपा उसको प्राप्त होती है और तत्त्वज्ञान के द्वारा आत्मसाक्षात्कार करके जीवन्मुक्ति को वह प्राप्त करता है। श्रीगुरुदेव के मुखारविन्द से यह भी श्रवण किया कि संसार में अति आसक्त और वैराग्य से रहित साधक के लिये कर्म्म विशेषरूप से हितकारी है, जो साधक संसार में न विशेषरूप से आसक्त हैं और न विशेषरूप से वैराग्यवान् हैं, उनके लिये उपासना विशेषरूप से हितकरी है एवं जब साधक संसार से आसक्तिशून्य होने लगे और उसके अन्तःकरण में विषय-वैराग्य की विमल ज्योति विकासित होने लगे तो उस भाग्यवान् अधिकारी के लिये आत्मज्ञान का श्रवण मनन और निदिध्यासन ही केवल कल्याणकारक है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

संसारसमुद्र से निस्तारकर्त्ता श्रीगुरुदेव के चरणों के निकट बैठ कर उनसे इस तत्त्वबोध नामक ग्रन्थ के अध्ययन करने का सौभाग्य मुझको प्राप्त हुआ। उस समय श्रीगुरुमहाराज से मैंने यह भी श्रवण किया है कि लोककल्याणार्थ पुस्तकप्रणयन और पुस्तकदान को ब्रह्मदान कहते हैं अतः उनकी आज्ञा से यह ग्रन्थ भाषानुवाद सहित सम्पादित करके प्रकाशित किया जाता है। इस ग्रन्थद्वारा आत्मज्ञानेच्छु नरनारियों को यदि कुछ भी लाभ पहुँचेगा तो मैं अपने को धन्य समझूँगी॥ निवेदनमिति।

सिंघाई राजभवन
अक्षय तृतीया
सं० १९७२ वैक्रमीय } सुरथकुमारी देवी।

—:o:—

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ओं नमः परमात्मने ।

तत्त्वबोधः ।

श्रीशङ्कराचार्य्यविरचितः

भाषाऽनुवादटिप्पणीसहितः ।

मङ्गलाचरणम् ।

यस्मिन्सर्व्वे यतः सर्व्वे यः सर्व्वे सर्व्वतश्च यः ।
यश्च सर्व्वमयो देवस्तस्मै सर्व्वात्मने नमः ॥ १ ॥
योगीन्द्रं वासुदेवेन्द्रं नत्वा ज्ञानप्रदं गुरुम् ।

मङ्गलाचरण ।

जिनमें सब स्थित हैं, जिनसे सब उत्पन्न हुए हैं, जो सर्व्वरूप हैं, जो सब ओर हैं अर्थात् सर्व्वव्यापक हैं और जो सर्व्वमयदेव हैं, उन सर्व्वात्मा ब्रह्म को प्रणाम है ॥ १ ॥ ज्ञान-प्रदान करने वाले योगीन्द्र

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षूणां हिताऽर्थाय तत्त्वबोधो विधीयते ॥ २ ॥

हेत्ववबोधनम्।

पठन्ति चतुरो वेदान् धर्म्मशास्त्राण्यनेकशः।
आत्मानं नैव जानन्ति दर्व्वी पाकरसं यथा ॥ ३ ॥

ग्रन्थारम्भः।

अतः साधनचतुष्टयसम्पन्नाऽधिकारिणां मोक्ष-साधनभूतं तत्त्वविवेकप्रकारं वक्ष्यामः ॥ ४ ॥ साधनचतुष्टयं किम् ॥ ५ ॥ नित्याऽनित्यवस्तु-

---

श्रीगुरुदेव वासुदेवेन्द्र को प्रणाम करके मुमुक्षुओं के हितार्थ तत्त्वबोध कहा जाता है ॥ २ ॥

ग्रन्थनिर्म्माण का हेतु।

मनुष्य चारों वेद और अनेक धर्म्मशास्त्र पढ़ते हैं; परन्तु जैसे दर्वी (करछुल) पकान्न के रसको नहीं जानती है उसी प्रकार वे आत्माको नहीं जानते हैं॥ ३॥

ग्रन्थारम्भ।

अब साधनचतुष्टयसम्पन्न अधिकारियों के लिये मोक्ष के साधनरूप तत्त्वविवेक का प्रकार कहते हैं॥ ४॥ साधनचतुष्टय कौन कौन हैं ?॥ ५॥ नित्या-

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

विवेकः इहाऽमुत्राऽर्थफलभोगविरागः शमाऽऽदि-षट्साधनसम्पत्तिः मुमुक्षुत्वञ्चेति ॥ ६ ॥ नित्यं वस्तु एकं ब्रह्म तद्व्यतिरिक्तं सर्व्वमनित्यमेवेति नित्याऽनित्यवस्तुविवेकः * ॥ ७ ॥ इह स्रक्‌च-न्दनवनिताऽऽदिषु सर्व्वेषु भोगेषु अमुत्र स्वर्गा-दिलोकानां सर्व्वेषु भोगेषु चेच्छाराहित्यमेव

नित्यवस्तुविवेक, इहाऽमुत्राऽर्थफलभोगविराग, शमादिषट्साधनसम्पत्ति और मुमुक्षुत्व ॥ ६ ॥ नित्य वस्तु एक ब्रह्म है और उसके अतिरिक्त सब अनित्य हैं ऐसा विचार ही नित्याऽनित्यवस्तुविवेक है ॥ ७ ॥ इस संसार में इस लोक के माला चन्दन स्त्री आदि सब विषयों के भोग की और परलोक के स्वर्गादि लोकों के सब भोगों की इच्छा न रहनाही

* सृष्टि के सब पदार्थ अर्थात् प्रपञ्चमय यह संसार अनित्य अस्थायी और नाशवान् है, विचार द्वारा जब तक यह सिद्धान्त साधक के हृदय में निश्चय नहीं होता है तब तक साधनचतुष्टय का यह पहला अधिकार साधक को नहीं प्राप्त होता है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

विरागः * ॥ ८ ॥ शमाऽऽदिषट्साधनसम्पत्तिः का ॥ ६ ॥ शमदमोपरतितितिक्षाश्रद्धासमाधानमिति षट् ॥ १० ॥ अन्तरिन्द्रियनिग्रहः शमः ॥ ११ ॥ दमः बाह्येन्द्रियनिग्रहः ॥ १२ ॥ उपरतिः प्रपञ्चो-

---

विराग है ॥ ८ ॥ शमादि षट्–साधन–सम्पत्ति कौन कौन हैं ? ॥ ६ ॥ शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा और समाधान ये छः हैं ॥ १० ॥ अन्तरिन्द्रिय अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों का निग्रह शम कहाता है ॥ ११ ॥ दम वाह्येन्द्रिय अर्थात् कर्म्मेन्द्रियों के निग्रह को कहते हैं ॥१२॥ प्रपञ्च अर्थात् संसार से उपरमण अर्थात् उपराम होने के साथ ही साथ स्वधर्म्म का अनुष्ठान करने को ही

---

* साधनचतुष्टय का दूसरा अधिकार वैराग्य है। इस लोक की सब वस्तु अर्थात् धन जन ऐश्वर्य्य आदि विषय और यौवन प्रभुत्व आदि सब सम्पत्ति में दुःख ज्ञान करके उनमें त्यागवृत्ति और इसी प्रकार पारलौकिक स्वर्गादि सुखों के नाशवान् होने के कारण उनमें भी अनिच्छा जब साधक में होने लगे तब विरागरूपी द्वितीय अधिकार उसको प्राप्त होता है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

परमणपूर्व्वकं स्वधर्म्माऽनुष्ठानमेव ॥ १३ ॥ तितिक्षा शीतोष्णसुखदुःखादिद्वन्द्वसहिष्णुत्वम्॥ १४॥ श्रद्धा गुरुर्वेदान्तवाक्येषु विश्वासः ॥ १५ ॥ समाधानं * चित्तैकाग्रता॥ १६ ॥ मुमुक्षुत्वं मोक्षमाप्नुयामितीच्छा ॥ १७ ॥ एतत्साधनचतुष्टयसम्पन्नस्तत्त्व-

---

उपरति कहते हैं ॥ १३ ॥ तितिक्षा, शीत उष्ण सुख दुःखादि द्वन्द्वों का सहिष्णु अर्थात् सहनशील होना है ॥ १४ ॥ श्रीगुरुदेव के वचनों पर और वेदान्त अर्थात् ज्ञानप्रतिपादक शास्त्रों पर विश्वास करना ही श्रद्धा है ॥ १५ ॥ समाधान चित्त की एकाग्रता को कहते हैं ॥ १६ ॥ और "मैं मोक्ष को प्राप्त होऊँ" ऐसी इच्छा करना मुमुक्षुत्व है ॥ १७ ॥ इन चार प्रकार के साधनों में योग्यता प्राप्त करने के पश्चात् साधक

---

* ये छः षट्सम्पत्ति कहलाती हैं। इन छः के प्राप्त होने से साधक को तीसरा अधिकार प्राप्त होता है। साधक जब जिस विषय में मन लगाना चाहें, तुरतहीं उस विषय में मन एकाग्र कर सकें, चित्त की इस बलवती दशा को समाधान कहते हैं।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

विवेकस्याऽधिकारी भवति ॥ १८ ॥ तत्त्वविवेको नाम आत्मा सत्यस्तदन्यत्सर्व्वं मिथ्येति ज्ञानमेव ॥ १९ ॥ आत्मा कः ॥ २० ॥ स्थूलसूक्ष्मकारणशरीरेभ्यो व्यतिरिक्तः पञ्चकोशाऽतीतः सन् अवस्थात्रयसाक्षी चतुर्विंशति-तत्त्वाऽऽधारः अविद्यामायोपाधिना प्रतीयमानाभ्यां जीवेश्वराभ्यां भिन्नः सच्चिदानन्दस्वरूपो यस्तिष्ठति स आत्मा * ॥ २१ ॥ स्थूलशरीरं कीदृशम् ॥ २२ ॥

तत्त्वविवेक का अधिकारी होता है ॥ १८ ॥ आत्मा सत्य है और उसके अतिरिक्त सब मिथ्या है यह ज्ञानही तत्त्वविवेक है ॥ १९ ॥ आत्मा कौन हैं ? ॥ २० ॥ स्थूल सूक्ष्म और कारण शरीर से जो पृथक् हैं, पञ्चकोशों से जो अतीत हैं, तीनों अवस्थाओं के जो साक्षीरूप हैं, चतुर्विंशति तत्त्वों के जो आधारहैं और अविद्या तथा माया के द्वारा प्रतीयमान जो जीव और ईश्वर इन दोनों से जो भिन्न हैं, वही सच्चिदानन्दस्वरूपवान् आत्मा हैं ॥ २१ ॥ स्थूल शरीर कैसा

* इस ग्रन्थमें आत्मा शब्दसे परमात्मा अर्थात् ब्रह्म समझना उचितहै।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

पञ्चीकृतपञ्चमहाभूतैः कृतं सत् कर्म्मजन्यं सुख-दुःखादिभोगायतनमस्ति जायते वर्द्धते विपरिणमतेऽपक्षीयते विनश्यतीति षड्भावविकारैर्युक्तं यत्तत्स्थूलशरीरम् ॥ २३ ॥ सूक्ष्मशरीरं कीदृशम् ॥२४॥ अपञ्चीकृत * पञ्च महाभूतैः कृतं सत् कर्म्मजन्यं सुख-दुःखादिभोगसाधनं पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि पञ्च कर्म्मे-

---

होता है ? ॥ २२ ॥ पञ्चीकृत पञ्च महाभूतों से बना हुआ, कर्म्मों से उत्पन्न और सुखदुःखादि भोगों का जो स्थान है; अर्थात् जिसके द्वारा सुखदुःखादि भोग होते हैं एवं वर्त्तमान है, उत्पन्न होता है, बढ़ता है, परिणाम को प्राप्त होता है, क्षय होता है और नाश होता है, इन छः भाव विकारों से युक्त जो है वह स्थूल शरीर है ॥ २३ ॥ सूक्ष्म शरीर कैसा होता है ? ॥ २४ ॥ अपञ्चीकृत पञ्च महाभूतों से बना हुआ, कर्म्मों से

---

* पञ्चीकरण का वर्णन आगे आवेगा । प्रत्येक भूतों में जब पञ्चीकरण होता है तो उस भूत को पञ्चीकृत महाभूत कहते हैं; परन्तु जब प्रत्येक भूत अपनी असली सूक्ष्मावस्था में रहे तो उस बेमेल और सूक्ष्मावस्था को अपञ्चीकृत अवस्था कहते हैं ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

न्द्रियाणि पञ्च वायवः मनश्चैकं बुद्धिश्चैका एवं सप्तदशकलाभिः सह यत्तिष्ठति तत्सूक्ष्मशरीरम् ॥ २५ ॥ कारणशरीरं * कीदृशम् ॥ २६ ॥ अनिर्व्वाच्याऽनाद्यविद्यारूपं स्थूलसूक्ष्मशरीरकारणमात्रं स्वस्वरूपाऽज्ञानं निर्व्विकल्पकरूपं यदस्ति तत्कारणशरीरम् ॥ २७ ॥ पञ्च-

उत्पन्न और सुखदुःखादि भोगों का जो साधनरूप है एवं पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्म्मेन्द्रिय, पाँच वायु, एक मन और एक बुद्धि, इस प्रकार सत्रह कलाओं से जो बना हुआ है वह सूक्ष्मशरीर है ॥ २५ ॥ कारण शरीर कैसा होता है ? ॥ २६ ॥ अनिर्व्वचनीया अनादि अविद्यारूप, स्थूलशरीर और सूक्ष्मशरीर का कारणमात्र, अपने स्वरूप का अज्ञानस्वरूप एवं निर्व्विकल्पकरूप जो है वही कारणशरीर है ॥ २७ ॥

* अनादि जीव-प्रवाह की अलग अलग जीवसृष्टि के प्रारम्भ में जड़ और चेतन की ग्रन्थि बँधते समय जो प्रथम दशा पैदा होती है वही जीव का कारणशरीर है। सूक्ष्मशरीर के संस्कारों में फर्क

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

कोशाः * के ॥ २८ ॥ अन्नमय-प्राणमय-मनोमय-विज्ञानमयाऽऽनन्दमयाऽऽख्याः ॥२९॥ अन्नमयकोशः कः ॥ ३० ॥ अन्नरसेनैवाऽऽविर्भूयाऽन्नरसेनैवाऽभिवृ-

पाँच कोश कौन कौन हैं ? ॥ २८ ॥ अन्नमय प्राणमय मनामेय विज्ञानमय और आनन्दमय हैं ॥ २९ ॥ अन्नमय कोश किसको कहते हैं ? ॥ ३० ॥ अन्न के रस से ही उत्पन्न होकर, अन्न के रस से ही उन्नति (वृद्धि) को प्राप्त होकर और अन्न की रसरूपा

पड़ता है और उसी प्रकार जीव को अपने अपने संस्कारों के अनुसार अलग अलग विचित्रतामय स्थूलशरीर को धारण करना पड़ता है; परन्तु अनादि अविद्यामूलिका और अन्य दो शरीरों की मूल कारणरूपा एवं चिदात्मा को ढकनेवाली और विकारहीन जो दशा है उसको कारणशरीर कहते हैं।

* कोश शब्द से आवरण आच्छादन छिलका आदि समझना चाहिये। जैसे प्याज में एक के ऊपर दूसरा कोश रहता है उसी प्रकार जीवशरीर में ये पाँच कोश समझने उचित हैं। प्रथम आनन्दमय कोश होता है, उसके ऊपर विज्ञानमय कोश होता है, उसके ऊपर मनोमय कोश होता है, उसके ऊपर प्राणमय कोश होता है और इन सबोंके ऊपर अन्नमय कोश होता है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

द्धिस्प्राप्याऽन्नरसमयपृथिव्यां यद्विलीयते सोऽन्नमयः स्थूलशरीरम् ॥ ३१ ॥ प्राणमयमनोमयविज्ञानमयानां सूक्ष्मशरीरम् ॥ ३२ ॥ प्राणमयः कः॥ ३३॥ प्राणादयः पञ्च वायवः कर्म्मेन्द्रियैर्मिलिताः प्राणमयः ॥ ३४ ॥ मनोमयः कः ॥ ३५ ॥ मनश्च ज्ञानेन्द्रियपञ्चकञ्च मिलित्वा मनोमयः ॥ ३६ ॥ विज्ञानमयः कः ॥ ३७॥ बुद्धिश्च ज्ञानेन्द्रियपञ्चकञ्च मिलित्वा विज्ञान-

---

पृथिवी में जो लयको प्राप्त होता है वह अन्नमय कोश है. इसी को स्थूलशरीर कहते हैं ॥ ३१ ॥ प्राणमय कोश, मनोमय कोश और विज्ञानमय कोशों का सूक्ष्मशरीर होता है ॥ ३२ ॥ प्राणमय कोश किसको कहते हैं ? ॥ ३३ ॥ प्राणादि पाँच वायु कर्म्मेन्द्रियों से मिल कर प्राणमय कोश कहाते हैं ॥ ३४ ॥ मनोमय कोश किसको कहते हैं ? ॥ ३५ ॥ मन और पाँचों ज्ञानेन्द्रिय मिल कर मनोमय कोश कहाता है ॥ ३६ ॥ विज्ञानमय कोश किसको कहते हैं ? ॥ ३७ ॥ बुद्धि और पाँचों ज्ञानेन्द्रिय मिल कर विज्ञानमय कोश होता

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मयः ॥ ३८ ॥ आनन्दमयः कः ॥ ३९ ॥ कारणशरीरभूताऽविद्यास्थमलिनसत्त्वं स्वरूपाऽज्ञानं प्रियादिभावसहितं सत् आनन्दमयः कोशस्तदेव कारणशरीरम् चतुर्विंशतितत्त्वानां कारणत्वात् ॥ ४० ॥ अवस्थात्रयं कीदृशम् ॥ ४१ ॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याख्याः ॥ ४२ ॥ जाग्रदवस्था का ॥ ४३ ॥ श्रोत्रादिभिर्ज्ञानेन्द्रियैः शब्दादयो विषयाः ज्ञायन्ते यत्र सा जाग्रदवस्था ॥ ४४ ॥ स्थूलशरीराऽभिमानी आत्मा

है ॥ ३८ ॥ आनन्दमय कोश किसको कहते हैं ? ॥ ३९ ॥ कारणशरीरभूता अविद्या में स्थित, मलिन सत्त्व, आत्मस्वरूप का अज्ञानरूप और प्रिय मोद और प्रमोद इन भावों से युक्त आनन्दमय कोश है और वही कारणशरीर है क्योंकि वही चौबीस तत्त्वों का कारण है ॥ ४० ॥ अवस्थात्रय क्या हैं ? ॥ ४१ ॥ जाग्रदवस्था, स्वप्नावस्था और सुषुप्ति अवस्था ॥ ४२ ॥ जाग्रदवस्था किसको कहते हैं ? ॥ ४३ ॥ श्रोत्रादि ज्ञानेन्द्रियों से शब्दादि विषय जहाँ जाने जाते हैं वह जाग्रदवस्था है ॥ ४४ ॥ स्थूलशरीर का अभिमानी

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

विश्व इत्युच्यते ॥ ४५ ॥ स्वप्नावस्था का ॥ ४६ ॥ जाग्रदवस्थायां यद्दृष्टं यच्छ्रुतं तज्जनितवासनया यत्र प्रपञ्चः प्रतीयते सा स्वप्नावस्था ॥ ४७ ॥ सूक्ष्मशरीराऽभिमानी आत्मा तैजस इत्युच्यते ॥ ४८ ॥ सुषुप्त्यवस्था का ॥ ४९ ॥ अहं किमपि न ज्ञातवान् सुखेन मया निद्राऽनुभूतेति यच्चाऽनुभूतं जाग्रदवस्थायां स्मर्यते सा सुषुप्त्यवस्था ॥ ५० ॥

आत्मा विश्व कहा जाता है ॥ ४५ ॥ स्वप्नावस्था किसको कहते हैं ? ॥ ४६ ॥ जाग्रदवस्था में जो देखने में और सुनने में आता है उससे उत्पन्न वासना से जो प्रपञ्च प्रतीत होता है वह स्वप्नावस्था है ॥ ४७ ॥ सूक्ष्मशरीर का अभिमानी आत्मा तैजस कहाजाता है ॥ ४८ ॥ सुषुप्ति अवस्था किसको कहते हैं ? ॥ ४९ ॥ मैं कुछ भी नहीं जानता था, सुखपूर्वक मैंने निद्रा ली. इस प्रकार का अनुभव जाग्रदवस्था में जो याद दिलाती है वह सुषुप्ति अवस्था है ॥ ५० ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

कारणशरीराऽभिमानी आत्मा प्राज्ञ * इत्युच्यते ॥ ५१ ॥ चतुर्विंशतितत्त्वानि† कानि ॥ ५२ ॥ ज्ञानेन्द्रियाणि पञ्च श्रोत्रत्वक्चक्षूरसनाघ्राणाऽऽख्यानि ॥ ५३ ॥ कर्म्मेन्द्रियाणि पञ्च वाक्पाणि-

कारण शरीर का अभिमानी आत्मा प्राज्ञ कहाजाता है ॥ ५१ ॥ चौवीस तत्त्व कौन कौन हैं ? ॥ ५२ ॥ श्रोत्र त्वक् चक्षु रसना और घ्राण, ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय हैं ॥ ५३ ॥ वाक् पाणि पाद पायु और उपस्थ, ये पाँच

* समष्टि स्थूलशरीर को ही विराट् कहते हैं इस कारण स्थूलशरीर के देवता विश्व कहाते हैं। सूक्ष्म राज्य के सूक्ष्म शरीर-विशिष्ट देवताओं का शरीर तेजोमय होता है इस कारण सूक्ष्म शरीर के अभिमानी देवता तैजस कहाते हैं एवं कारण शरीर सूक्ष्मातिसूक्ष्म है इस कारण उसके अभिमानी देवता प्राज्ञ कहाते हैं।

† यहां तत्त्वशब्द से प्राकृतिक विभाग समझना उचित है। सांख्यशास्त्र ने भी चौवीस तत्त्व माने हैं; परन्तु दोनों की नामावली में कुछ मतभेद है। तत्त्वों का एक दूसरे में अन्तर्भाव मान लेने पर सांख्य और वेदान्त के चौवीस तत्त्वों का मतभेद निराकरण होसक्ता है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

पादपायूपस्थाऽऽख्यानि ॥ ५४ ॥ प्राणाः पञ्च प्राणाऽपानसमानोदानव्यानाऽऽख्याः ‡ ॥५५॥ तन्मात्राणि * कति ॥ ५६ ॥ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाऽऽख्यानि पञ्च ॥५७॥ अन्तःकरणचतुष्टयं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्ताऽऽख्यम् ॥ ५८ ॥ एतानि चतुर्विंशति

कर्मेन्द्रिय हैं ॥ ५४ ॥ प्राणवायु, प्राण अपान समान उदान और व्यान इस प्रकार से पाँच हैं ॥ ५५ ॥ तन्मात्रा कितनी हैं ? ॥ ५६ ॥ शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध ये पाँच हैं ॥५७॥ मन बुद्धि चित्त और अहङ्काररूप से अन्तःकरण चारप्रकार का है ॥ ५८ ॥ इस प्रकार

---

‡ शास्त्रों में कहा है कि:—हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिमण्डले। उदानः कण्ठदेशे स्याद्व्यानः सर्वशरीरगः ॥ प्राण वायु हृदय में रहता है। अपान वायु गुदा में स्थित है। समान वायु नाभि में है। उदान वायु कण्ठ में अवस्थित है और व्यान वायु सारे शरीर में रहा करता है।

* तन्मात्रा अपञ्चीकृत पाँचों भूतों के अलग अलग स्वरूप को कहते हैं।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

तत्त्वानि॥ ५९ ॥ ज्ञानेन्द्रियाणां विषयाः के ॥ ६० ॥ श्रोत्रस्य विषयः शब्दः ॥ ६१ ॥ त्वचो विषयः स्पर्शः ॥ ६२ ॥ चक्षुषोर्विषयो रूपम् ॥ ६३ ॥ रसनायाः विषयो रसः ॥ ६४ ॥ घ्राणस्य विषयो गन्धः ॥ ६५ ॥ कर्म्मेन्द्रियाणां विषयाः के ॥ ६६ ॥ वाचो विषयो वक्तव्यः ॥ ६७ ॥ पाण्योर्विषयः आदातव्यः ॥ ६८ ॥ पादयोर्विषयो गन्तव्यः ॥६९॥ पायोर्विषय उत्स्रष्टव्यो मलः ॥ ७० ॥ उपस्थस्य विषय

से ये चौवीस तत्त्व हुए ॥ ५९ ॥ ज्ञानेन्द्रियों के विषय कौन कौन हैं ? ॥ ६० ॥ श्रोत्रेन्द्रिय का विषय शब्द है ॥ ६१ ॥ त्वगिन्द्रिय का विषय स्पर्श है ॥ ६२ ॥ चक्षुरिन्द्रिय का विषय रूप है ॥ ६३ ॥ रसनेन्द्रिय का विषय रस है ॥ ६४ ॥ घ्राणेन्द्रिय का विषय गन्ध है ॥ ६५ ॥ कर्म्मेन्द्रियों के विषय कौन कौन हैं ? ॥६६॥ वागिन्द्रिय का विषय वक्तव्य है ॥ ६७ ॥ पाणीन्द्रिय का विषय वस्तु ग्रहण है ॥ ६८ ॥ पादेन्द्रिय का विषय गन्तव्य है॥६९॥गुदेन्द्रिय का विषय मलत्याग है॥७०॥ उपस्थेन्द्रिय का विषय आनन्द और मूत्रत्याग

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

आनन्दो मूत्रत्यागश्च ॥ ७१ ॥ अन्तःकरणचतुष्टयस्य संकल्पनिश्चयगर्वस्मरणानि विषयाः ॥ ७२ ॥ अथ तत्तदभिमानाऽवधारका अधिपतयः कथ्यन्ते ॥ ७३ ॥ दिग्वाताऽर्कप्रचेतोऽश्विवह्नीन्द्रोपेन्द्रमृत्यवः । शिवश्चन्द्रश्चतुर्वक्त्रो रुद्रः क्षेत्रज्ञ ईश्वराः॥७४॥श्रोत्रेन्द्रियस्य दिशः ॥ ७५ ॥ त्वगिन्द्रियस्य वायुः ॥७६॥ चक्षुरिन्द्रियस्य सूर्य्यः ॥ ७७ ॥ रसनेन्द्रियस्य वरुणः ॥ ७८ ॥

है ॥ ७१ ॥ अन्तःकरण चतुष्टय (चारों अन्तःकरण) के संकल्प करना, निश्चय करना, अहङ्कार करना और स्मरण करना ये विषय हैं ॥ ७२ ॥ अब प्रत्येक के अभिमान को धारण करने वाले अधिपति कहे जाते हैं ॥ ७३ ॥ दिक्, वायु, अर्क. प्रचेता. अश्वि, वह्नि, इन्द्र, उपेन्द्र, मृत्यु, शिव, चन्द्र, ब्रह्मा, रुद्र और क्षेत्रज्ञ ये सब अधिपति हैं ॥ ७४ ॥ श्रोत्रेन्द्रिय को देवता दिशाएँ हैं ॥ ७५ ॥ त्वगिन्द्रिय की देवता वायु है ॥ ७६ ॥ चक्षुरिन्द्रिय की देवता सूर्य्य है ॥ ७७ ॥ रसनेन्द्रिय की देवता वरुण है ॥ ७८ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

घ्राणेन्द्रियस्य अश्विनौ देवौ ॥ ७९ ॥ वागिन्द्रियस्य* अग्निः ॥ ८० ॥ पाणीन्द्रियस्य इन्द्रः॥८१॥ पादेन्द्रियस्य उपेन्द्रः ॥८२॥ गुदेन्द्रियस्य मृत्युः॥८३॥ शिश्नेन्द्रियस्य † प्रजापतिः शिवश्च ॥ ८४ ॥ अन्तः-

---

घ्राणेन्द्रियकी देवता दोनों अश्विनीकुमार हैं॥७९॥वागिन्द्रियकी देवता अग्नि है ॥८० ॥ पाणीन्द्रियकी देवता इन्द्र है ॥ ८१ ॥ पादेन्द्रिय की देवता उपेन्द्र है ॥८२॥ गुदेन्द्रिय की देवता मृत्यु है ॥ ८३ ॥ उपस्थेन्द्रिय की देवता प्रजापति और शिव है॥८४॥अन्तःकरणचतुष्टय में से मनकी देवता चन्द्रमा,बुद्धि की देवता चतुर्वक्त्र,

---

* वाक् और रसना ये दोनों एकही जिह्वा इन्द्रिय से सम्बन्ध रखने वाली हैं इस कारण जिह्वा के अग्नि और वरुण दो अधिपति हुए। इसी कारण द्विगुण शक्ति होने से जिह्वा इतनी बलवती है।

† उपस्थेन्द्रिय का साधारण कार्य्य मूत्रत्याग है और असाधारण कार्य्य रति-आनन्द उपभोग करना है। इस कारण प्रथम कार्य्य के लिये शिव और द्वितीय कार्य्य के लिये प्रजापति देवता हैं। उपस्थ में भी जिह्वा की तरह द्विगुण शक्ति विद्यमान है इस कारण यह इन्द्रिय भी इतनी बलवती है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

करणचतुष्टये मनसश्चन्द्रः बुद्धेश्चतुर्वक्त्रः * अहङ्कारस्य रुद्रः चित्तस्य क्षेत्रज्ञः ॥ ८५ ॥ मायोपाधिः सन्नात्मा ईश्वर इत्युच्यते ॥ ८६ ॥ अविद्योपाधिः सन्नात्मा जीव इत्युच्यते † ॥ ८७ ॥ एतत्कोशपञ्चकं मदीयं शरीरं मदीयाः प्राणाः मदीयं मनः मदीया

अहङ्कार की देवता रुद्र और चित्त की देवता क्षेत्रज्ञ है ॥ ८५ ॥ मायारूप उपाधि से युक्त होकर आत्मा ईश्वर कहाजाता है ॥ ८६ ॥ अविद्यारूप उपाधि से युक्त होकर आत्मा जीव कहा जाता है ॥ ८७ ॥ मेरा शरीर है. मेरे प्राण हैं, मेरा मन है, मेरी बुद्धि है और मेरा ज्ञान है,

* मतान्तर में इसी कारण चतुर्वक्त्र ब्रह्माही अन्तःकरणचतुष्टय के अधिदैव हैं और इसी कारण व चतुर्वक्त्र हैं। चारों में बुद्धि का प्राधान्य ही इसका कारण है।

† अविद्या जीव को अपने अधीन करके फँसा लेती है; परन्तु विद्यारूपिणी महामाया सर्वदा ईश्वर के अधीन रहकर उनकी ही सेवा करती हुई जगत् का सृष्टि स्थिति और लय कार्य्य करती रहती है। यद्यपि जीव में अविद्या की उपाधि और ईश्वर में माया की उपाधि के होने का वर्णन है परन्तु ऊपर कथित विज्ञान के अनुसार दोनों में आकाश पाताल कासा अन्तर है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धिर्मदीयं ज्ञानमिति स्वेनैव ज्ञायते तद्यथा स्वेनैव ज्ञातं कटककुण्डलगृहाऽऽदिकं स्वस्माद्भिन्नं वर्त्तते तथा पञ्चकोशा मदीयत्वेन ज्ञाता आत्मा न भवन्ति ॥ ८८ ॥ एवमेव स्थूलसूक्ष्मकारणनामानि शरीराणि जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याख्या अवस्थाः पञ्च ज्ञानेन्द्रियादयश्चतुर्विंशति तत्त्वानि जीवेश्वरौ चेमे सर्व्वे आत्मा न भवन्ति ॥८९॥ तर्ह्यात्मा कः ॥९०॥

इस प्रकार से पृथक् पृथक् अनुभव करते हुए पृथक् पृथक्रूप से पाँचों कोशों की प्रतीति होती है। जैसे "हमारे" हैं इस प्रकार जानेहुए कटक (कड़ा) कुण्डल और घर आदि अपने से भिन्न होते हैं वैसे ही पञ्च-कोश, हमारे हैं इस प्रकार जानने के कारण, आत्मा नहीं होसक्ते हैं अर्थात् पञ्चकोश आत्मा नहीं हैं उन के जाननेवाले आत्मा हैं ॥ ८८ ॥ इसी रीति से ही स्थूलशरीर, सूक्ष्मशरीर और कारणशरीर, जाग्रद-वस्था, स्वप्नावस्था और सुषुप्ति अवस्था, पञ्च ज्ञाने-न्द्रियादि चौवीस तत्त्व, जीव और ईश्वर, ये सब आत्मा नहीं होसक्ते हैं ॥ ८९ ॥ तब आत्मा किसको

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सच्चिदानन्दस्वरूपः ॥ ६१ ॥ सत् किम् ॥ ६२ ॥ कालत्रयेऽपि तिष्ठतीति आत्मा सत् ॥ ६३ ॥ चित्किम् ॥ ६४ ॥ साधनाऽन्तरनैरपेक्ष्येण स्वयं प्रकाशमानतया यदितरपदार्थाऽवभासनमस्तीति आत्मा चित् ॥ ६५ ॥ आनन्दः कः ॥ ६६ ॥ देश-कालवस्तुपरिच्छेदशून्यः आत्मा आनन्द इत्या-त्मनः सच्चिदानन्दरूपत्वम् ॥ ६७ ॥ अथ चतुर्विं-

---

कहते हैं? ॥ ६० ॥ आत्मा सच्चिदानन्दस्वरूप हैं ॥ ६१ ॥ सत् किसको कहते हैं? ॥ ६२ ॥ भूत भविष्यत् वर्त्त-मान इन तीनों कालों में एकरस स्थित हैं अतः आत्मा सत् हैं ॥६३॥ चित् किसको कहते हैं? ॥६४॥ अन्य साधन की अपेक्षा न करके स्वयं प्रकाशमान हैं और अन्यपदार्थों को प्रकाशित करते हैं अतः आत्मा चित् हैं ॥६५॥ आनन्द किसको कहते हैं? ॥६६॥ देश काल और वस्तुकृत परिच्छेद (आच्छादन) से शून्य हैं अतः आत्मा आनन्द हैं, इस प्रकार से आत्मा सच्चिदानन्दस्वरूप हैं ॥ ६७ ॥ अब चौबीस तत्त्वों

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

शतितत्त्वोत्पत्तिप्रकारं वक्ष्यामः ॥ ६८ ॥ ब्रह्मा-
ऽऽश्रया माया * त्रिगुणाऽऽत्मिका प्रकृति-नामा-

की उत्पत्ति का प्रकार कहते हैं ॥ ६८ ॥ ब्रह्म की आ-
श्रयभूता त्रिगुणात्मिका माया का ही प्रकृति ऐसा

* वेदान्त शास्त्र ने माया को ब्रह्म की आश्रयभूता और अनादि मान कर भी सान्त माना है इसी कारण यह शास्त्र जगत् को मिथ्या-रूप प्रमाणित करसका है एवं दैवीमीमांसारूपी उपासनाकाण्ड सम्बन्धीय भक्तिशास्त्र ने माया को ब्रह्मशक्ति मान कर ब्रह्म और माया में अभेद बताया है । जैसे मैं और मेरी शक्ति ऐसा कहने में दोनों का अभेद सिद्ध होता है ऐसे ही ब्रह्म और ब्रह्मशक्ति माया में अभेद है । जैसी मेरी शक्ति मुझ में कभी अव्यक्त रहती है और कभी मुझसे प्रकाशित होकर अलग प्रतीत होती है उसी प्रकार उपासना शास्त्र के अनुसार सृष्टिदशा में द्वैतवाद और मुक्तिदशा में अद्वैतवाद दोनों ही सिद्ध होते हैं । सुतरां इस विज्ञान के अनुसार द्वैत और अद्वैतवाद का कोई भी विरोध नहीं होसक्ता और उपासना की सर्व्वथा सिद्धि होती है । सांख्य आदि शास्त्रों के साथ वेदान्त शास्त्र का समन्वय भी इसी ढंग पर होसक्ता है इस कारण शास्त्रों में विरोध की कल्पना करना उचित नहीं है ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ऽस्ति ॥ ९९ ॥ तत आकाशः सम्भूत आकाशा-
द्वायुः वायोरग्निरग्नेरापोऽद्भ्यः पृथिवी समजा-
यत ॥ १०० ॥ एतेषां पञ्चतत्त्वानां मध्ये आकाशस्य
सात्त्विकांशाच्छ्रोत्रेन्द्रियं सम्भूतम् ॥ १०१ ॥ वायोः
सात्त्विकांशात्त्वगिन्द्रियं सम्भूतम् ॥ १०२ ॥
अग्नेः सात्त्विकांशाच्चक्षुरिन्द्रियं सम्भूतम् ॥ १०३ ॥
जलस्य सात्त्विकांशाद्रसनेन्द्रियं सम्भूतम् ॥ १०४ ॥

नाम है ॥ ९९ ॥ उस प्रकृति से आकाश उत्पन्न हुआ, आकाश से वायु उत्पन्न हुआ, वायु से अग्नि उत्पन्न हुआ, अग्नि से जल उत्पन्न हुआ और जलसे पृथिवी उत्पन्न हुई ॥ १०० ॥ इन पाँच तत्त्वों में से आकाश के सात्त्विक अंश से श्रोत्रेन्द्रिय उत्पन्न हुआ ॥ १०१ ॥ वायु के सात्त्विक अंश से त्वगिन्द्रिय उत्पन्न हुआ ॥ १०२ ॥ अग्नि के सात्त्विक अंश से चक्षुरिन्द्रिय उत्पन्न हुआ ॥ १०३ ॥ जल के सात्त्विक अंश से रस-नेन्द्रिय उत्पन्न हुआ ॥ १०४ ॥ पृथिवी के सात्त्विक

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

पृथिव्याः सात्त्विकांशाद्घ्राणेन्द्रियं सम्भूतम्॥१०५॥ एतेषां पञ्चतत्त्वानां समष्टिसात्त्विकांशान्मनोबुद्धिचित्ताऽहङ्काराः सम्भूताः ॥ १०६ ॥ सङ्कल्पविकल्पाऽऽत्मकं मनः ॥ १०७ ॥ निश्चयाऽऽत्मिका बुद्धिः ॥ १०८ ॥ स्मरणकर्तृ चित्तम् ॥ १०९ ॥ अहङ्कर्त्ता अहङ्कारः ॥ ११० ॥ एतेषां पञ्चतत्त्वानां मध्ये आकाशस्य राजसांशाद्वागिन्द्रियं सम्भूतम् ॥ १११ ॥ वायो राजसांशात्पाणीन्द्रियं

अंश से घ्राणेन्द्रिय उत्पन्न हुआ ॥ १०५ ॥ इन पाँचों तत्त्वों के समष्टि (मिले हुए) सात्त्विक अंश से मन बुद्धि चित्त और अहङ्कार उत्पन्न हुए ॥ १०६ ॥ संकल्प विकल्प करनेवाला मन है ॥ १०७ ॥ उनका निश्चय करनेवाली बुद्धि है ॥ १०८ ॥ स्मरण करानेवाला चित्त है ॥ १०९ ॥ अहङ्कार करनेवाला अहङ्कार है ॥ ११० ॥ इन पाँचों तत्त्वों में से आकाश के राजस अंश से वागिन्द्रिय उत्पन्न हुआ ॥ १११ ॥ वायु

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सम्भूतम् ॥ ११२ ॥ वह्ने राजसांशात्पादेन्द्रियं सम्भूतम् ॥ ११३ ॥ जलस्य राजसांशादुपस्थेन्द्रियं सम्भूतम् ॥ ११४ ॥ पृथिव्या राजसांशाद्गुदेन्द्रियं सम्भूतम् ॥ ११५ ॥ एतेषां समष्टिराजसांशात्प्राणादिपञ्चवायवः सम्भूताः ॥ ११६ ॥ नागाद्युपवायवः नागकूर्म्मकृकलदेवदत्तधनञ्जयाः पञ्चस्त्रेतेष्वन्तर्गता एव ॥ ११७ ॥ एतेषां पञ्चतत्त्वानां समष्टितामसांशात् पञ्चीकृतपञ्चमहाभूतानि सम्भ-

---

के राजस अंश से पाणीन्द्रिय उत्पन्न हुआ ॥ ११२ ॥ वह्नि के राजस अंश से पादेन्द्रिय उत्पन्न हुआ ॥ ११३ ॥ जल के राजस अंश से उपस्थेन्द्रिय उत्पन्न हुआ ॥ ११४ ॥ पृथिवी के राजस अंश से गुदेन्द्रिय उत्पन्न हुआ ॥ ११५ ॥ इनके समष्टि (मिले हुए) राजस अंश से प्राणादि पाँच वायु उत्पन्न हुए ॥ ११६ ॥ नागादि उपवायु अर्थात् नाग कूर्म्म कृकल देवदत्त और धनञ्जय भी उक्त पाँच वायुओं के अन्तर्गत ही हैं ॥ ११७ ॥ इन पाँचों तत्त्वों के समष्टि (मिले हुए) तामस अंश से

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

वन्ति ॥ ११८ ॥ पञ्चीकरणं नाम किम् ॥ ११९ ॥ एतेषां पञ्चमहाभूतानां तामसांशस्वरूपं एकं एकं भूतं द्विधा विभज्य एकमेकमर्द्धं पृथक् व्यवस्थाप्य अपरमपरमर्द्धं चतुर्धा विभज्य पृथक् स्थापिताऽर्द्धेषु भागेषु चतुर्धा विभक्तस्य एकैकस्य भूताऽर्द्धस्य एकमेकमंशं संयुक्तं कृत्वा पञ्चीकरणं सम्पाद्यते ॥१२०॥ एतेन प्रत्येकभूतस्य स्वाऽर्द्धेऽपरेषां भूतानामर्द्धस्य चतुर्थांशं सम्मिलितं भवति ॥ १२१ ॥ यथा

पञ्चीकृत पञ्चमहाभूत होते हैं ॥ ११८ ॥ पञ्चीकरण किसको कहते हैं ? ॥ ११९ ॥ इन पाँचों महाभूतों में से, इनके तामसांशस्वरूप एक एक भूत के दो दो भाग करके और एक एक भाग को पृथक् रखकर दूसरे दूसरे भाग के चार चार भाग करके पृथक् रक्खे हुए भागों में एक एक भाग प्रत्येक भूत का संयुक्त करने से पञ्चीकरण होता है ॥ १२० ॥ इससे निश्चय हुआ कि प्रत्येक भूत के अपने आधे में प्रत्येक दूसरे भूतों के आधे भाग का चतुर्थांश मिला हुआ रहता है ॥१२१॥ जैसे पञ्चीकृत आकाश में अपञ्चीकृत

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

पञ्चीकृते आकाशे अपञ्चीकृताऽऽकाशस्याऽर्द्धमपरेषां प्रत्येकेषामपञ्चीकृतानां चतुर्णां भूतानामष्टमांशोऽस्तीति सर्व्वत्र ज्ञातव्यम् ॥ १२२ ॥ एतेभ्यः पञ्चीकृतपञ्चमहाभूतेभ्यः प्रत्येकं ब्रह्माण्डं सम्भूतम् ॥ १२३ ॥ एतन्मध्ये चतुर्दशभुवनानि जातानि ॥ १२४ ॥ तत्तन्मध्ये उद्भिज्जस्वेदजाऽण्डजजरायुजाः जायन्ते ॥ १२५ ॥ तत्तच्छरीराऽभिमानी जीवः अनन्त-ब्रह्माण्डाऽभिमानी च

आकाश का आधा भाग और दूसरे प्रत्येक अपञ्चीकृत भूतों के अर्द्ध भाग का चतुर्थांश अर्थात् अपर प्रत्येक भूतों का अष्टमांश मिला हुआ है। इसी प्रकार प्रत्येक भूत में जानना चाहिये ॥ १२२ ॥ इन पञ्चीकृत पञ्च महाभूतों से प्रत्येक ब्रह्माण्ड उत्पन्न होता है ॥ १२३ ॥ उन उन ब्रह्माण्डों में चौदह भुवन होते हैं ॥ १२४ ॥ उन उन ब्रह्माण्डों में उद्भिज्ज, स्वेदज, अण्डज और जरायुज ये चार प्रकार के शरीर उत्पन्न होते हैं ॥ १२५ ॥ शरीरों का अभिमान रखने

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ईश्वरः ॥ १२६ ॥ एवं पिण्डब्रह्माण्डयो-
रैक्यं सम्भूतम् ॥ १२७ ॥ आत्मन्येवाऽविद्या-
मायाभ्यां जीवेश्वरभेददृष्टिः कल्पिता ॥ १२८ ॥
शरीराऽभिमानी जीवनामकं ब्रह्मप्रतिविम्बं भ-
वति ॥ १२९ ॥ स एव जीवः स्वभावत एव स्व-
स्मादीश्वरं भिन्नत्वेन जानाति ॥ १३० ॥ एव-
मुपाधिभेदाज्जीवेश्वरभेददृष्टिर्यावत्पर्य्यन्तं तिष्ठति
तावत्पर्य्यन्तं जन्ममरणादिरूपसंसारो न निवर्त्तते

वाला जीव और अनन्त ब्रह्माण्डों के अभिमान रखने
वाले ईश्वर हैं ॥ १२६ ॥ इस प्रकार से पिण्ड और
ब्रह्माण्ड की एकता प्रतिपन्न हुई ॥ १२७ ॥ आत्मा में
ही अविद्या और माया के द्वारा जीव और ईश्वर-
रूप से भेददृष्टि कल्पना की गई है ॥ १२८ ॥ शरीरों
का अभिमान रखनेवाला जीव ब्रह्म का प्रतिविम्ब
है ॥ १२९ ॥ वही जीव स्वभाव सेही अपने से ईश्वर
को भिन्न समझता है ॥ १३० ॥ इस प्रकार उपाधि
के भेद से जीव और ईश्वर में भेददृष्टि जब तक

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

तस्मात्कारणान्न जीवेश्वरयोर्भेदबुद्धिः स्वीकार्य्या ॥ १३१ ॥ ननु साऽहङ्कारस्य किञ्चिज्ज्ञस्य जीवस्य निरहङ्कारेण सर्व्वज्ञेनेश्वरेण सह तत्त्वमसीति महावाक्यात्कथमभेदबुद्धिः स्यादुभयोर्विरुद्धधर्म्माऽऽक्रान्तत्वात् ॥ १३२ ॥ तत्त्वंपदयोर्वाच्याऽर्थो लक्ष्याऽर्थश्चेत्यर्थद्वयमस्ति ॥ १३३ ॥ अविद्यावत्कार्य्यकर्त्तृत्वादिगुणवान् शरीराऽभिमानी जीवः

रहती है तब तक जन्ममरणरूप संसार निवृत्त नहीं होता है इस कारण से जीव और ईश्वर में भेददृष्टि कदापि नहीं करनी चाहिये ॥ १३१ ॥ अहङ्कारवान् और अल्पज्ञ जीव की निरहङ्कार और सर्व्वज्ञ ईश्वर के साथ "तत्त्वमसि" इस महावाक्यके द्वारा, दोनों के विरुद्धधर्म्मी होने के कारण, अभेद बुद्धि कैसे हो-सक्ती है ? ॥ १३२ ॥ तत् और त्वंपद का वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ इस प्रकार से दो दो प्रकार का अर्थ होता है ॥ १३३ ॥ अविद्या, उसका कार्य्य और कर्त्तृत्वादि गुणवाला और शरीर का अभिमानी जीवही

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

त्वंपदवाच्याऽर्थः ॥ १३४ ॥ अविद्योपाधिनिर्मुक्तं समाधिदशासम्पन्नं अविद्यातत्कार्य्यरहितं चिन्मात्रं शुद्धं चैतन्यं त्वंपदलक्ष्याऽर्थः ॥ १३५ ॥ माया तत्कार्य्यसर्व्वज्ञत्वादिगुणवान् ईश्वरस्तत्पदवाच्याऽर्थः ॥ १३६ ॥ मायोपाधिशून्यं शुद्धं चैतन्यं माया तत्कार्य्यरहितं चिन्मात्रं तत्पदलक्ष्याऽर्थः ॥ १३७ ॥ एवं जीवेश्वरयोश्चैतन्यरूपेणाऽभेदे बाधकाऽ-

---

त्वंपद का वाच्यार्थ है ॥ १३४ ॥ अविद्यारूप उपाधि से निर्मुक्त, समाधि दशा प्राप्त, अविद्या और उसके कार्य्य से रहित, चिन्मात्र और शुद्ध चैतन्य ही त्वंपद का लक्ष्य अर्थ है ॥ १३५ ॥ माया और उसका कार्य्य एवं सर्वज्ञत्व आदि गुणोंवाला ईश्वर तत्पद का वाच्य अर्थ है ॥ १३६ ॥ मायारूप उपाधि से शून्य, शुद्ध चैतन्य, माया और उसके कार्य्य से रहित और चिन्मात्र तत्पदका लक्ष्य अर्थ है ॥ १३७ ॥ इस प्रकार से जीव और ईश्वर में चैतन्यरूप से अभेद होने में

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

भावः* ॥ १३८ ॥ एवमेव तयोरैक्यं अहं ब्रह्माऽस्मी-
त्यादिमहावाक्यैश्च बोध्यते ॥ १३९ ॥ तस्मात्
ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव केवलम् इति
शास्त्रोपदेशेन गुरूपदेशेन स्वाऽनुभवेन च ये जानन्ति
येषाञ्च सर्व्वेष्वपि भूतेषु ब्रह्मबुद्धिरुत्पन्ना ते जीव-

कोई बाधक नहीं है ॥ १३८ ॥ उन दोनों की एकता "अहं ब्रह्माऽस्मि" इत्यादि महावाक्यों से भी जानी जाती है ॥ १३९ ॥ इस कारण से "ब्रह्म सत्य है, जगत् मिथ्या है और जीव केवल ब्रह्मही है" ऐसा जो शास्त्रोपदेश से, गुरूपदेश से और अपने अनु-भव से जानते हैं एवं जिनमें सब प्राणीमात्रों पर

* सिद्धान्त यह हुआ कि जब अविद्यारूप उपाधि का भ्रम दूर होजायगा तो आत्मसत्ता ही लक्ष्यार्थरूप से अवशेष रहेगी। उसी प्रकार जब मायारूप उपाधि का महत्त्व तत्त्वज्ञान के द्वारा प्रतिपन्न होगा तौभी अवशेष आत्मस्वरूपही लक्ष्यार्थरूप से रह जायगा। इस प्रकार से तत्त्वज्ञानी जीवन्मुक्त महात्मा जीव और ईश्वर दोनों की अभेद सत्ता अनुभव करके कृतकृत्य होते हैं।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

न्मुक्ता इत्यर्थः ॥१४०॥ पुनः जीवन्मुक्ताः के ॥१४१॥ येषामपरोक्षं ब्रह्मज्ञानं ते ॥ १४२ ॥ अपरोक्षज्ञानं तु यथा देहोऽहं पुरुषोऽहं ब्राह्मणोऽहं शूद्रोऽहमस्मीति दृढनिश्चयस्तथा नाऽहं देहः न पुरुषः न ब्राह्मणः न शूद्रः किन्तु निजस्वरूपे सत्यज्ञानानन्द–(सच्चिदानन्द) स्वरूपः प्रकाशरूपः सर्व्वान्तर्य्यामी चिदाकाशरूपोऽस्मीति दृढनिश्चयरूपम् ॥ १४३ ॥ ब्रह्मैवाऽहमस्मीत्यपरोक्षज्ञानेन सकलकर्म्मबन्धनि-

---

ब्रह्मबुद्धि उत्पन्न हुई है वे जीवन्मुक्त हैं ॥ १४० ॥ पुनः जीवन्मुक्त किनको कहते हैं? ॥१४१॥ जिनको अपरोक्ष-रूपसे ब्रह्मज्ञान उत्पन्न हुआ है वे जीवन्मुक्त हैं ॥१४२॥ जैसे मैं देह हूँ, मैं पुरुष हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ, मैं शूद्र हूँ; इस प्रकार से दृढ़ निश्चय होता है वैसे ही मैं देह नहीं हूँ, न पुरुष हूँ, न ब्राह्मण हूँ, न शूद्र हूँ किन्तु अपने स्वरूप में सत्यज्ञानानन्द (सच्चिदानन्द) स्वरूप, प्रकाशरूप, सर्व्वान्तर्यामी और चिदाकाशरूप हूँ ऐसा दृढ़ निश्चय होना अपरोक्ष ज्ञान कहा जाता है ॥ १४३ ॥ "मैं ब्रह्म ही हूँ" इस प्रकार के अप-

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

वृत्तिर्भवति ॥१४४॥ कर्म्माणि कति विधानि ॥१४५॥ सञ्चितप्रारब्धाऽऽगाम्याख्यानि त्रिविधानि ॥ १४६ ॥ सञ्चितकर्म्म किम् ॥ १४७ ॥ अनुपभुक्तानां अनन्तकोटिजन्मसु कृतकर्म्मणां संस्कारभूतं बीजवत् कारणरूपं यत्पूर्व्वार्जितं कर्म्मजातं तत्सञ्चितं कर्म्म ॥ १४८ ॥ प्रारब्धं किम् ॥ १४९ ॥ एतत्स्थूलशरीरजनकमस्मिन्नेव देहे सुखदुःखाऽऽदिभोग-

---

रोक्ष ज्ञान से सब कर्म्मबन्धनों की निवृत्ति होजाती है ॥ १४४ ॥ कर्म्म कितने प्रकार के हैं ? ॥ १४५ ॥ सञ्चित प्रारब्ध और आगामि ये तीन प्रकार के हैं ॥ १४६ ॥ सञ्चितकर्म्म किसको कहते हैं ? ॥ १४७ ॥ जिनका भोग उत्पन्न नहीं हुआ है और जो अनन्त कोटि जन्मों में किये हुए कर्म्मों के संस्कारभूत हैं एवं बीजवत् कारणरूप जो पूर्व्वार्जित कर्म्म हैं वे सञ्चितकर्म्म हैं ॥ १४८ ॥ प्रारब्धकर्म्म किसको कहते हैं ? ॥ १४९ ॥ इस स्थूलशरीर के उत्पादक (कारण) और इसी देह में सुख दुःखादि भोगों को देनेवाले

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

प्रदं पूर्व्वार्जितं कर्म्म ॥ १५० ॥ आगामि कर्म्म किम् ॥ १५१ ॥ ज्ञानोत्पत्त्यनन्तरं ज्ञानिदेहकृतं पुण्यपापरूपं कर्म्म यदस्ति तदागामीत्यभिधीयते ॥ १५२ ॥ तत्र सञ्चितं कर्म्म ब्रह्मैवाऽहमस्मीति निश्चयात्मकज्ञानाऽग्निना दग्धं भवति* ॥ १५३ ॥

जो पूर्व्व जन्मार्जित कर्म्म हैं वे ही प्रारब्ध हैं ॥१५०॥ आगामिकर्म्म किसको कहते हैं ? ॥ १५१ ॥ ज्ञान की उत्पत्ति के पश्चात् ज्ञानी के देह से किये हुए जो पाप पुण्यात्मक कर्म्म हैं वे आगामिकर्म्म कहे जाते हैं ॥ १५२ ॥ इन तीन प्रकार के कर्म्मों में से ज्ञानी के सञ्चितकर्म्म " ब्रह्म ही मैं हूँ " ऐसे निश्चयात्मक ज्ञान की अग्नि से जल जाते हैं ॥ १५३ ॥ श्रीभगवान्

* सञ्चितकर्म्मसमूह के संस्काररूप बीज चित्ताकाश में जमा रहते हैं, जब ज्ञानी महापुरुष अपरोक्ष ज्ञान से यह जान जाते हैं कि मैं पञ्चकोश नहीं हूँ मैं पञ्चकोशों से अतीत और उनका द्रष्टा आत्मा हूँ तब पञ्चकोश में स्थित चित्ताकाश में रहनेवाले सञ्चितकर्म्म संस्कार भी पञ्चकोश में ही रहजाते हैं और उस मुक्तात्मा को बन्धन नहीं कर सक्ते।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञानाऽग्निः सर्व्वकर्म्माणि भस्मसात्कुरुतेऽर्ज्जुन !
इति गीतायां भगवद्वाक्यात् ॥ १५४ ॥ ज्ञानिनः
प्रारब्धकर्म्मणां भोगादेव क्षयः * ॥ १५५ ॥ भ्रम-
त्कुलालचक्रस्य कुलालेन सह तस्मिन् समये

ने गीता में कहा है कि "हे अर्ज्जुन ! ज्ञानरूप अग्नि
सब कर्म्मों को भस्म करदेती है" ॥ १५४ ॥ ज्ञानी के
प्रारब्धकर्म्मों का भोग सेही क्षय होता है ॥ १५५ ॥
जिस प्रकार घूमते हुए कुलालचक्र का उस समय

---

* जिस प्रकार कुम्हार अपने कुलालचक्र को लकड़ी से चला-कर पीछे अपने हाथ और लकड़ी को अलग कर लेता है, तत्पश्चात् कुम्हार के अपने चलाने की शक्ति को अलग करलेने पर भी वह कुलालचक्र पहली प्रयोग की हुई शक्ति से अपने आपही तबतक घूमता रहता है जबतक वह शक्ति क्षय न हो जाय; उसी प्रकार तत्त्वज्ञानी महात्मा तत्त्वज्ञान द्वारा जीवन्मुक्त दशाको प्राप्त होजाने पर भी अपने स्थूल शरीर-उत्पन्नकारी प्रारब्धभोग शरीर के अन्तपर्य्यन्त भोगते रहते हैं । प्रारब्धकर्म्म केवल भोग से ही क्षय होता है ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सम्बन्धराहित्यवत् निःसङ्गत्वेन भोगान्न तेभ्यो ज्ञानिनि क्रियमाणकर्म्मसंस्कारोत्पत्तिः ॥ १५६ ॥ आगामिकर्म्मभिः नलिनीदलगतजलवत् ज्ञानिनां सम्बन्धो नाऽस्त्येवाऽतस्तदपि ज्ञानेन नश्यति * ॥ १५७ ॥ ज्ञानिनः सञ्चिताऽऽगामिकर्म्माणि

कुलाल के साथ सम्बन्ध नहीं रहताहै उसी तरह निःसंगरूप से भोग होने के कारण उन कर्म्मों के भोग से ज्ञानी में क्रियमाण कर्म्मसंस्कारों की उत्पत्ति नहीं होती है ॥१५६॥ आगामि कर्म्मों से ज्ञानियों का कमल दलगत जल के समान सम्बन्धही नहीं है इस कारण वे भी ज्ञान के द्वारा नाश को प्राप्त होते जाते हैं ॥ १५७ ॥ ज्ञानी के सञ्चित कर्म्म और आगामि

* इस प्रकार जब तत्त्वज्ञानी महापुरुष तत्त्वज्ञान के द्वारा यह समझजाते हैं कि मैं पञ्चकोश नहीं हूँ मैं पञ्चकोश का द्रष्टा हूँ तो पञ्चकोशरूपी शरीर का किया हुआ नवीन आगामि कर्म्म उस मुक्तात्मा को बन्धन नहीं करसक्ता ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्माण्डप्रकृतिमाश्रयन्ते * ॥ १५८ ॥ अपि च ज्ञानिनो ये भजन्ति अर्च्चयन्ति तान्प्रति ज्ञानिकृतो पुण्यकर्म्मांशो गच्छति ये ज्ञानिनो निन्दन्ति दुःख-

कर्म्म ब्रह्माण्ड प्रकृति को आश्रय करते हैं॥ १५८॥ और भी कहा है कि ज्ञानी की जो सेवा और पूजा

* पूर्व्वकथित विज्ञान के अनुसार यह निश्चय हुआ कि मुक्तात्मा के आगामि और सञ्चित कर्म्म उसको पुनः बन्धन नहीं करसक्ते तो यह प्रश्न हो सक्ता है कि जहां कर्म्म-वीजरूप संस्कार है वहां कर्म्म से फलोत्पत्ति होना अवश्य सम्भव है इस कारण मुक्तात्मा के आगामि और सञ्चित कर्म्म का फल कहां चला जाता है? सिद्धान्त यह है कि वे दोनों कर्म्म जब मुक्तात्मा को स्पर्श नहीं करसक्ते तो वे अगत्या अपनी ब्रह्माण्ड प्रकृति को आश्रय करते हैं। सुतरां उस ब्रह्माण्ड में समष्टिरूप से वे कर्म्म भोगे जाते हैं; अर्थात् जिस ब्रह्माण्ड में वो मुक्तात्मा उत्पन्न हुआ था उसी ब्रह्माण्ड के समष्टि प्रारब्ध में वे कर्म्म शामिल होजाते हैं। उन कर्म्मों के द्वारा उस ब्रह्माण्ड के समष्टि जीवों को समष्टि सुखदुःख प्राप्त होता है। एवं भविष्यत् सत्य त्रेता द्वापर कलियुग आदि काल के उत्पन्न होने में वे सहायक होते हैं।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

प्रदानं कुर्व्वन्ति तान्प्रति ज्ञानिकृतो पापकर्म्मांशो गच्छति * ॥ १५९ ॥ एवं ज्ञानी सर्वकर्म्मबन्धाँस्तरति ॥ १६० ॥ आत्मवित् संसारं तीर्त्वा ब्रह्माऽऽनन्दमिहैव प्राप्नोति ॥ १६१ ॥ तरति शोक-

करते हैं उनको ज्ञानी के किये हुए पुण्यकर्म्मों का अंश भोग करना पड़ता है और जो ज्ञानी की निन्दा करते हैं और उसको दुःख देते हैं उनको ज्ञानी के किये हुए पापकर्म्मों का अंश भोग करना पड़ता है॥ १५९॥ इस प्रकार से ज्ञानी सब कर्म्मों के बन्धनों से तर जाता है ॥ १६०॥ आत्मज्ञानी संसार को तर कर यहीं ब्रह्मानन्द को प्राप्त होता है ॥ १६१ ॥

* कहीं कहीं ऐसे ऐसे जीवन्मुक्त महापुरुषों को सुखदुःख पहुँचानेवाले सेवक और द्वेष्टा व्यक्तियों को भी ये कर्म्म उत्तम और अधम फल दिया करते हैं; अर्थात् यदि साक्षात् ब्रह्ममूर्त्ति जीवन्मुक्त महापुरुष जब इस प्रकार के व्यक्तियों पर दृष्टि डालते हैं तो ब्रह्माण्ड प्रकृति के आश्रयभूत ये कर्म्म उक्त जीवन्मुक्त महापुरुष को सुख और दुःख पहुँचानेवाले यथाक्रम सेवक और द्वेष्टा व्यक्तियों को असाधारण पुण्य और असाधारण पापरूप से यथाक्रम आश्रय करके सेवकों को श्रेष्ठ सुख और द्वेष्टाओं को असाधारण दुःख उत्पन्न करते हैं।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मात्मवित्, एको देवः सर्व्वभूतेषु गूढः, भिद्यते हृदयग्रन्थिः * इत्यादि–श्रवणात् ॥ १६२ ॥ ज्ञानिदेहः काश्यां चण्डाल–वाटिकायां वा पतति

शास्त्रों में कहा है कि "आत्मज्ञानी सब शोकों को तरजाता है" "एकही आत्मदेव सब भूतों में व्यापक हैं" "आत्मज्ञान से हृदय की ग्रन्थि खुल जाती है" ॥१६२॥ ज्ञानी का देह काशी में अथवा चाण्डाल

* जीवन्मुक्त महापुरुष साक्षात् ब्रह्मरूपही हैं। जीवदशा में जड़ और चेतनकी जो ग्रन्थि बनी थी वह ग्रन्थि मुक्तदशा में खुल जाने से जीव शिवरूप हो जाता है। जीवन्मुक्त महापुरुष दो श्रेणी के होते हैं; एक ब्रह्मकोटि के जीवन्मुक्त और दूसरे ईशकोटि के जीवन्मुक्त। मुक्तदशा में मुक्तात्मा के अवशेष रहे हुए प्रारब्ध कर्म्मोंकी विचित्रताही इन दो भेदों का कारणहै। श्रीगीताजी में कहाहै कि:—

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते।

ब्रह्मकोटि के जीवन्मुक्त मूक और आत्माराम होते हैं। जगत् के साथ उनका कोई सम्बन्ध पुनः नहीं रहता है और ईशकोटि के जीवन्मुक्त ईश्वरप्रतिनिधिरूप होकर भगवत्कार्य्यरूप से जगत्-कल्याण में रत रहते हैं। केवलमात्र ऐसेही जीवन्मुक्त महापुरुषों के उपकार से उपकृत होकर जगत् धन्य होता है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

तथाऽपि ज्ञानी मुक्तः सच्चिदानन्दरूपः कृताऽर्थो भवति ॥ १६३ ॥ तथा च स्मृतौः—

तनुं त्यजतु वा काश्यां श्वपचस्य गृहेऽथवा ।
ज्ञानसम्प्राप्तिसमये मुक्तोऽसौ विगताशयः ॥ १६४ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्यश्रीशङ्करा-
चार्य्यविरचितं तत्त्वबोधाऽऽख्यं
प्रकरणं समाप्तम् ॥

के घर में छूट जाय तौभी ज्ञानी सच्चिदानन्दरूप होकर मुक्त होता हुआ कृतार्थ होता है ॥ १६३ ॥ स्मृति में कहा है कि "ज्ञानी काशी में शरीर त्याग करे, चाहे चाण्डाल के घर में शरीर त्याग करे, वह ज्ञान प्राप्ति होने के समय में ही विगताशय होकर मुक्त हो जाता है" ॥ १६४ ॥

इस प्रकार श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य
श्रीशङ्कराचार्य्यविरचित तत्त्वबोधनामक
प्रकरण का भाषानुवाद समाप्त हुआ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

तत्त्वबोध

भाषानुवाद और टिप्पणीसहित समाप्त हुआ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मस्तोत्रम् ।

ओं नमस्ते सते सर्वलोकाऽऽश्रयाय ।
नमस्ते चिते विश्वरूपात्मकाय ॥
नमोऽद्वैततत्त्वाय मुक्तिप्रदाय ।
नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय ॥ १ ॥
त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यम् ।
त्वमेकं जगत्कारणं विश्वरूपम् ॥

तुम सर्व लोकों के आश्रयस्वरूप हो, तुम सत् हो, तुमको नमस्कार है। तुम चैतन्यमय और विश्व के आत्मास्वरूप हो तुम्हें नमस्कार है। तुम अद्वैत तत्त्वरूप हो और मुक्ति के देनेवाले हो, तुम्हें नमस्कार है। तुम सर्वव्यापी निर्गुण ब्रह्म हो, तुम्हें नमस्कार है॥ १ ॥ केवल एक तुम्हीं शरण देनेवाले हो, तुम्हीं एक वरेण्य हो, केवल एक तुम्हीं जगत्

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ।
त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥ २ ॥
भयानां भयं भीषणं भीषणानां।
गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ॥
महोच्चैः पदानां नियन्तृत्वमेकं।
परेषां परं रक्षकं रक्षकानाम् ॥ ३ ॥

के कारण हो और विश्वरूप हो, केवल एक तुम्हीं इस जगत् के कर्त्ता पाता (पालनकर्त्ता) और संहर्त्ता हो, तुम्हीं केवल परमात्मा हो, निश्चल हो, निर्विकल्प हो, अर्थात् विभिन्न प्रकार की कल्पनाओं से शून्य हो और अद्वितीय हो ॥ २ ॥ तुम भयों के भी भय हो और भीषणों के भी भीषण हो, तुम्हीं प्राणियों की गति हो और पवित्रों के भी पवित्र करने वाले हो, परमोच्चपदों के भी तुम एकमात्र नियामक हो, तुम प्रधान के भी प्रधान हो और रक्षकों

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

परेश ! प्रभो ! सर्व्वरूपाऽविनाशिन् !
अनिर्देश्य ! सर्वेन्द्रियाऽगम्य ! सत्य ! ।
अचिन्त्याऽक्षर ! व्यापकाऽव्यक्ततत्त्व !
जगद्भासकाऽधीश ! पायादपायात् ॥ ४ ॥
तदेकं स्मरामस्तदेकं जपाम-
स्तदेकं जगत्साक्षिरूपं नमामः ।

केभी रक्षक हो ॥ ३ ॥ हे परमात्मन् ! हे प्रभो ! तुम सर्व्वरूप हो तुम अविनाशी हो, अनिर्देश्य हो, सकल इन्द्रियों से अगम्य हो, सत्य स्वरूप हो, अचिन्त्य हो, अक्षय अव्यक्त और सर्व्वव्यापक हो और तुम जगत् के भासक एवं अधिपति हो, तुम हमारी भक्ति-विश्लेषणादि अपार विपद् से रक्षा करो ॥ ४ ॥ मैं उस अद्वितीय ब्रह्म का स्मरण करता हूँ, मैं उस अद्वितीय ब्रह्म का जप करता हूँ, मैं जगत् में एक-मात्र साक्षीस्वरूप उसको नमस्कार करता हूँ और

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सदेकं निधानं निरालम्बमीशम्
भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ॥ ५ ॥

इति ब्रह्मस्तोत्रम् ।

मैं कालत्रय में समानरूप से स्थित, जगत् के एकमात्र कारण, अन्य अवलम्बन रहित, अनन्त कोटि ब्रह्माण्डेश्वर, संसारसमुद्र को पार करने के लिये नौकारूप और शरणागतवत्सल परमात्मा की शरण लेता हूँ ॥ ५ ॥

इति ब्रह्मस्तोत्रं समाप्तम् ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञापन।

श्रीभारतधर्ममहामण्डल के शास्त्रप्रकाश विभाग द्वारा शास्त्रीय ग्रन्थ प्रकाशित करने का विराट् आयोजन किया गया है। विना उपयुक्त शास्त्रीय ग्रन्थों के प्रकाश के और विना हिन्दी भाषा की पुष्टि के हिन्दू जाति का कल्याण होना असम्भव है।

श्रीभारतधर्ममहामण्डल के व्यवस्थापक श्री १०८ स्वामी ज्ञानानन्दजी महाराज की सहायता से काशी के प्रसिद्ध विद्वानों के द्वारा सम्पादित होकर प्रामाणिक सुबोध और सुदृश्यरूप से यह ग्रन्थमाला निकलेगी। इन ग्रन्थों में से कुछ हिन्दी ग्रन्थ छपकर प्रकाशित होचुके हैं जिनकी नामावली नीचे दी जाती है। इनके अतिरिक्त सांख्यदर्शन, कर्ममीमांसादर्शन, दैवीमीमांसादर्शन, योगदर्शन आदि के भाष्य, हठयोगसंहिता, लययोगसंहिता, राजयोगसंहिता आदि ग्रन्थ बनचुके हैं और उनमें से कई ग्रन्थ छप रहे हैं। श्रीमद्भगवद्गीता पर एक ऐसा अपूर्व हिन्दीभाष्य छप रहा है कि जिस प्रकार की गीता आज तक किसी भाषा में भी प्रकाशित नहीं हुई है।

सदाचारसोपान। यह पुस्तक कोमलमति बालक—बालिकाओं की धर्म्मशिक्षा के लिये प्रथम पुस्तक है। बङ्गला और उर्दू भाषाओं में भी इसका अनुवाद छप चुका है और सारे भारतवर्ष में इसकी बहुत कुछ उपयोगिता मानी गई है। इसकी पांच आवृत्तियाँ छप चुकी हैं। अपने बच्चों की धर्म्मशिक्षा के लिये इस पुस्तक को हर एक हिन्दू को मंगवाना चाहिये। मूल्य प्रत्येक भाषा की पुस्तक का -) एक आना।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

कन्याशिक्षासोपान। कोमलमति कन्याओं के धर्म्मशिक्षा के लिये यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। इस पुस्तक की बहुत कुछ प्रशंसा हुई है। हिन्दूमात्र को अपनी अपनी कन्याओं को धर्म्मशिक्षा देने के लिये यह पुस्तक मँगवाना चाहिये। बङ्गला में भी छप चुकी है। मूल्य प्रत्येक भाषा की पुस्तक का -) एक आना।

धर्म्मसोपान। यह धर्म्मशिक्षाविषयक बड़ी पुस्तक है। बालकों को इससे धर्म्म का साधारण ज्ञान भली भांति हो जाता है। यह पुस्तक क्या बालक क्या वृद्ध स्त्री पुरुष सबके लिये बहुतही उपकारी है। धर्म्मशिक्षा पाने की इच्छा करनेवाले सज्जन अवश्य इस पुस्तक को मँगावें। मूल्य ।) चार आना।

ब्रह्मचर्य्यसोपान। ब्रह्मचर्य्यव्रतकी शिक्षाके लिये यह ग्रन्थ बहुतही उपयोगी है। सब ब्रह्मचारीआश्रम, पाठशाला और स्कूलों में इस ग्रन्थकी पढ़ाई होनी चाहिये। इसकी दो आवृत्ति छप चुकी हैं। मूल्य ≡) तीन आना।

राजशिक्षासोपान। राजा महाराजा और उनके कुमारों को धर्म्मशिक्षा देने के लिये यह ग्रन्थ बनाया गया है परन्तु सर्वसाधारण की धर्म्मशिक्षा के लिये भी यह ग्रन्थ बहुतही उपयोगी है। इसमें सनातनधर्म्म के अङ्ग और उसके तत्त्व अच्छी तरह बताये गये हैं। मूल्य ≡) तीन आना।

साधनसोपान। यह पुस्तक उपासना और साधनशैली की शिक्षा प्राप्त करने में बहुतही उपयोगी है। बालक बालिकाओं को पहलेही से इस पुस्तक को पढ़ाना चाहिये। यह पुस्तक ऐसी उपकारी है कि बालक और वृद्ध समानरूप से इससे साधनविषयक शिक्षा लाभ करसक्ते हैं। यह बङ्गला भाषा में भी छपी है।

मूल्य प्रत्येक भाषा की पुस्तक का =) दो आना।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

शास्त्रसोपान । सनातनधर्म्म के शास्त्रों का संक्षेप सारांश इस ग्रन्थ में वर्णित है । सब शास्त्रों का विवरण कुछ समझने के लिये प्रत्येक सनातनधर्म्मावलम्बी के लिये यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है ।

मूल्य ।) चार आना ।

धर्म्मप्रचारसोपान । यह ग्रन्थ धर्म्मोपदेश देनेवाले उपदेशक और पौराणिक पण्डितों के लिये बहुतही हितकारी है ।

मूल्य ≡) तीन आना ।

उपरिलेखित सब ग्रन्थ धर्म्मशिक्षाविषयक हैं । इस कारण स्कूल कालेज व पाठशालाओं को इकट्ठे लेने पर कुछ सुविधा से मिल सकेंगे और पुस्तकविक्रेताओं को इनपर योग्य कमीशन दिया जायगा ।

उपदेशपारिजात । यह संस्कृतगद्यात्मक अपूर्व ग्रन्थ है । इसमें सनातनधर्म्म क्या है, धर्म्मोपदेशक किसको कहते हैं, सनातनधर्म्म के सब शास्त्रों में क्या क्या विषय हैं, धर्म्मवक्ता होने के लिये किन किन योग्यताओं के होने की आवश्यकता है इत्यादि अनेक विषय इस ग्रन्थ में संस्कृतविद्वान्मात्र को पढ़ना उचित है और धर्म्मवक्ता, धर्म्मोपदेशक, पौराणिक, पण्डित आदि के लिये तो यह ग्रन्थ सब समय साथ रखने योग्य है । मूल्य ॥) आठआना ।

इस संस्कृतग्रन्थ के अतिरिक्त संस्कृतभाषा में योगदर्शन, सांख्यदर्शन, दैवीमीमांसादर्शन आदि दर्शनों का भाष्य, मन्त्रयोगसंहिता, हठयोगसंहिता, लययोगसंहिता, राजयोगसंहिता, हरिहरब्रह्मसामरस्य, योगप्रवेशिका, धर्म्मसुधाकर, श्रीमधुसूदनसंहिता आदि ग्रन्थ छप रहे हैं और शीघ्रही प्रकाशित होनेवाले हैं ।

कल्किपुराण । कल्किपुराण का नाम किसने नहीं सुना है । वर्तमान समय के लिये यह बहुतही हितकारी ग्रन्थ है, विशुद्ध

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दीअनुवाद और विस्तृत भूमिका सहित यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। धर्म्मजिज्ञासुमात्र को इस ग्रन्थ को पढ़ना उचित है।

मूल्य १) एक रुपया।

योगदर्शन । हिन्दीभाष्य सहित । इस प्रकारका हिन्दी भाष्य और कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है।

मूल्य २) दो रुपया ।

नवीनदृष्टि में प्रवीण भारत । भारतके प्राचीन गौरव और आर्य्यजातिका महत्त्व जानने के लिये यह एकही पुस्तक है।

मूल्य १) एक रुपया।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलरहस्य । इस ग्रन्थरत्न में सात अध्याय हैं । यथा—आर्य्यजातिकी दशाका परिवर्त्तन, चिन्ताका कारण, व्याधिनिर्णय, औषधिप्रयोग, सुपथ्यसेवन, बीजरक्षा और महायज्ञसाधन । यह ग्रन्थरत्न हिन्दूजातिकी उन्नतिविषय का असाधारण ग्रन्थ है। प्रत्येक सनातनधर्म्मावलम्बी को इस ग्रन्थ को पढ़ना चाहिये । द्वितीयावृत्ति छप चुकी है, इसमें बहुतसा विषय बढ़ाया गया है । इस ग्रन्थका आदर सारे भारतवर्ष में समानरूप से हुआ है । बङ्गला भाषा में यह ग्रन्थ अनुवादित होकर छप चुकाहै । धर्म्म के गूढ़ तत्त्व भी इसमें बहुत अच्छी तरह से बताये गये हैं ।

मूल्य प्रत्येक भाषा की पुस्तक का १) एक रुपया ।

निगमागमचन्द्रिका । प्रथम और द्वितीय भाग की दो पुस्तकें धर्म्मानुरागी सज्जनों को मिलसक्ती हैं ।

प्रत्येक का मूल्य १) एक रुपया ।

पहलेके पांच साल के पांच भागों में सनातनधर्म्म के अनेक गूढ़

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

रहस्यसम्बन्धीय ऐसे २ प्रबन्ध प्रकाशित हुए हैं कि आजतक वैसे धर्मसम्बन्धीय प्रबन्ध और कहीं भी प्रकाशित नहीं हुए हैं। जो सनातनधर्म्मके अनेक रहस्य जानकर तृप्त होना चाहें वे इन पुस्तकों को मँगावें। मूल्य पांचों भागों का २॥) ढाई रुपया।

भक्तिदर्शन। श्रीशाण्डिल्यसूत्रों पर बहुत विस्तृत हिन्दी भाष्य सहित और एक अति विस्तृत भूमिका सहित यह ग्रन्थ प्रणीत हुआ है। हिन्दी का यह एक असाधारण ग्रन्थ है। इस प्रकार का भक्तिसम्बन्धीय ग्रन्थ हिन्दी में पहले प्रकाशित नहीं हुआ था। भगवद्भक्ति के विस्तारित रहस्यों का ज्ञान इस ग्रन्थ के पाठ करने से होता है। भक्तिशास्त्र के समझने की इच्छा रखनेवाले और श्रीभगवान् में भक्ति करनेवाले धार्म्मिकमात्र को इस ग्रन्थ को पढ़ना उचित है। मूल्य १) एक रुपया।

गीतावली। इसको पढ़ने से सङ्गीतशास्त्र का मर्म्म थोड़े में ही समझ में आसकेगा और इसमें अनेक अच्छे अच्छे भजनों का भी संग्रह है। सङ्गीतानुरागी और भजनानुरागियोंको अवश्य इसको लेना चाहिये। मूल्य ।।) आठ आना।

गुरुगीता। इस प्रकार की गुरुगीता आजतक किसी भाषा में प्रकाशित नहीं हुई है। इसमें गुरुशिष्यलक्षण, उपासनाका रहस्य और भेद, मन्त्र हठ लय और राजयोगों का लक्षण और अङ्ग एवं गुरुमाहात्म्य, शिष्यकर्त्तव्य, परमतत्त्व का स्वरूप और गुरुशब्दार्थ आदि सब विषय स्पष्टरूप से हैं। मूल और स्पष्ट सरल व सुमधुर भाषानुवाद सहित यह ग्रन्थ छपा है। गुरु और शिष्य दोनों का उपकारी यह ग्रन्थ है। बङ्गलानुवाद भी छप चुका है।

मूल्य प्रत्येक भाषा की पुस्तक का =) दो आनामात्र।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मन्त्रयोगसंहिता । योगविषयक ऐसा अपूर्व्व ग्रन्थ आजतक प्रकाशित नहीं हुआ है। इसमें मन्त्रयोग के १६ अङ्ग और क्रमशः उनके लक्षण, साधनप्रणाली आदि सब अच्छी तरह से वर्णन किये गये हैं। गुरु और शिष्य दोनों ही इसमे परम लाभ उठासक्ते हैं। इसमें मन्त्रों का स्वरूप और उपास्य निर्णय बहुत अच्छा किया गया है। घोर अनर्थकारी साम्प्रदायिक विरोध के दूर होने को यह एकमात्र ग्रन्थ है। इसमें नास्तिकों के मूर्तिपूजा, मन्त्रसिद्धि आदि के विषय में जो प्रश्न होते हैं उनका अच्छा समाधान है।

मूल्य १) एक रुपयामात्र।

श्रीधर्मकल्पद्रुम । हिन्दूधर्म्म का अद्वितीय और परमावश्यक ग्रन्थ है। हिन्दूजाति की पुनरुन्नति के लिये जिन जिन आवश्यकीय विषयों की जरूरत है उनमें से सबसे बड़ी भारी जरूरत एक ऐसे धर्म्मग्रन्थ की थी कि जिसके अध्ययन–अध्यापन द्वारा सनातनधर्म्म का रहस्य और उसका विस्तारित स्वरूप तथा उसके सब अङ्ग उपाङ्गों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होसके और साथही साथ वेद और सब शास्त्रों का आशय और वेद और सब शास्त्रों में कहे हुए विज्ञानों का यथाक्रम स्वरूप जिज्ञासु को भली भांति विदित हो, इसी गुरुतर अभाव के दूर करनेके अर्थ भारत के प्रसिद्ध धर्म्मवक्ता और श्रीभारतधर्म्ममहामण्डल के उपदेशक महाविद्यालय के दर्शनशास्त्र के अध्यापक श्रीमान् स्वामी दयानन्दजी ने इस ग्रन्थ को प्रणयन करना प्रारम्भ किया है। इसमें वर्त्तमान समय के आलोच्य सभी विषय विस्तारितरूप से दिये जायँगे। पञ्चमहायज्ञ का विज्ञान, वेद की अपौरुषेयता तथा मन्त्र ब्राह्मण और उपनिषद् का पूर्ण रहस्य, पुराण के आख्यानों का गूढ़विज्ञान, दर्शनों का संक्षेप रहस्य, वर्णाश्रमधर्म्म का पूरा तत्त्व, आर्य्यजाति में पातिव्रत्यधर्म्म

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

की पूर्ण महिमा का रहस्य, उपासना का पूर्ण विज्ञान, सगुण निर्गुण अवतार आदि उपासना का तत्त्व, मन्त्रयोग हठयोग लययोग राजयोग का विज्ञान और अङ्ग, आर्य्यजाति व समाज की उन्नति का उपाय, पितृपूजा श्राद्ध परलोक आदि का रहस्य, षोडश संस्कार का विज्ञान, सृष्टि स्थिति प्रलय और मुक्ति का तत्त्व, जीव ब्रह्म ईश्वर का स्वरूप, जीवन्मुक्ति और संन्यास का तत्त्व, प्रवृत्ति निवृत्ति तत्त्व, सदाचारमहिमा, पुरुषशिक्षा और स्त्रीशिक्षा, सम्प्रदाय पन्थ और उपधर्म्मसमीक्षा, संन्यासी के साथ जगत्सेवा का सम्बन्ध इत्यादि सभी विषय पूर्ण वर्णन किये जायँगे जिससे आजकल के अशास्त्रीय और विज्ञानरहित धर्म्मग्रन्थों और धर्म्मप्रचार के द्वारा जो हानि होरही है वह सब दूर होकर यथार्थरूप से सनातन वैदिकधर्म्म का प्रचार होगा। इस ग्रन्थरत्न में साम्प्रदायिक पक्षपात का लेशमात्र नहीं रहा है और निष्पक्षरूप से सब विषय प्रतिपादन किये गये हैं जिससे सकल प्रकार के अधिकारी कल्याण प्राप्त करसकें। इसमें और भी एक विशेषता यह है कि हिन्दूशास्त्र के सभी विज्ञान शास्त्रीय प्रमाण और युक्ति के सिवाय आजकल की सायन्सविद्या के द्वारा भी प्रतिपादन किये गये हैं। जिससे आजकल के नवशिक्षित पुरुष भी इससे लाभ उठासकें। इसकी भाषा सरल मधुर और गम्भीर है। यह ग्रन्थ चौंसठ अध्याय और आठ समुल्लासों में पूर्ण होगा और यह बृहत् ग्रन्थ जो रायल साइज़ के तीन हज़ार पृष्ठ से अधिक होगा, आठ खण्ड में प्रकाशित होगा। इसके चार खण्ड प्रकाशित होचुके हैं। प्रथम और द्वितीय खण्ड का रायल एडीशन जो बहुत बढ़िया कागज़ पर छपा है और सुन्दर जिल्द बँधी हुई है उसका मूल्य ५) पांच रुपया है और सर्व्वसाधारण के उपयोगी अच्छे और सस्ते कागज़ पर साधारण एडीशन प्रथम खण्ड का मूल्य २) रुपया है।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

द्वितीय खण्ड का मूल्य १॥) तृतीय खण्ड का मूल्य २) और चतुर्थ खण्ड का मूल्य २) है और पञ्चम खण्ड यन्त्रस्थ है।

महामण्डल ग्रन्थमाला।

धर्मप्रचार के लिये सुलभ दो ही मार्ग हैं। (१) उपदेशकों द्वारा धर्मप्रचार करना, और (२) धर्मरहस्य सम्बन्धी मौलिक पुस्तकों का उद्धार व प्रकाश करना। महामण्डल ने प्रथम मार्ग का अवलम्ब आरम्भ से ही किया है और अब तो उपदेशक महाविद्यालय स्थापित कर महामण्डलने वह मार्ग स्थिर और परिष्कृत कर लिया है। दूसरे मार्ग के सम्बन्ध में भी यथायोग्य उद्योग आरम्भ से ही किया जा रहा है। विविध ग्रन्थों का संग्रह और निर्माण करना, मासिक पत्रिकाओंका सञ्चालन करना, शास्त्रीय ग्रन्थोंका आविष्कार करना, इस प्रकार के उद्योग महामण्डल ने किये हैं और उनमें सफलता भी प्राप्त की है। परन्तु अभीतक यह कार्य सन्तोषजनक नहीं हुआ है। महामण्डलको अब मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त होते ही इस विभाग को उन्नत करने का उसने विचार किया है। उपदेशकों द्वारा जो धर्मप्रचार होता है उसका प्रभाव चिरस्थायी होने के लिये उसी विषयकी पुस्तकों का प्रचार होना परम आवश्यक है। क्योंकि वक्ता एक दो वार जो कुछ सुना देगा, उसका मनन विना पुस्तकों का सहारा लिये नहीं हो सकता। इसके सिवा सब प्रकार के अधिकारियों के लिये एक ही वक्ता कार्यकारी नहीं हो सकता। पुस्तक-प्रचार द्वारा यह काम सहल हो जाता है। जिसे जितना अधिकार होगा, वह उतनेही अधिकार की पुस्तक पढ़ेगा और महामण्डल भी सब प्रकार के अधिकारियों के योग्य पुस्तकें निर्माण करेगा। सारांश, देशकी उन्नति के लिये, भारतगौरव की रक्षा के लिये और

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्यों में मनुष्यत्व उत्पन्न करनेके लिये महामण्डल ने अब पुस्तक प्रकाशन विभाग को अधिक उन्नत करने का विचार किया है और उसकी सर्वसाधारण से प्रार्थना है कि वे ऐसे सत्कार्य में इसका हाथ बटावें एवम् इसकी सहायता कर अपनी ही उन्नति कर लेने को प्रस्तुत हो जावें।

जो पुस्तक-मालाएँ महामण्डल से प्रकाशित होंगी; उनके कम से कम २००० स्थायी ग्राहक होने चाहिये। उन्हें सब पुस्तकें कुछ स्वल्प मूल्य में दी जायँगी। यदि हरएक शाखा सभा अपने मेम्बरों में से १०—१५ भी ग्राहक संग्रह कर देगी तो यह काम सहज हो सकता है।

अवैतनिक प्रचारकों को उचित कमीशन दिया जायगा। और जिन शाखा सभाओं द्वारा जितने ग्राहक संग्रह होंगे, उनको भी उसी हिसाब से सहायता मिलेगी, जिससे इस विभाग की उन्नति के साथ ही साथ उस शाखा की भी अर्थ वृद्धि हो। इसमें केवल शारीरिक श्रमकी ही आवश्यकता है।

जो सभा या जो प्रचारक सर्वोत्तम कार्य करेंगे, अर्थात ग्रन्थ-प्रचार कार्य में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे, उन्हें श्रीमहामण्डल के वार्षिकोत्सव पर विशेष पारितोषिक द्वारा, मेडल आदि द्वारा और अन्य प्रकार से भी कार्य के महत्त्व के अनुसार सम्मानित किया जायगा।

महामण्डल की सभी सम्बन्धयुक्त सभाओं से निवेदन

है कि वे अपने सभाभवनों में या नगरों में—जहां उचित समझें—इस शास्त्र प्रकाश विभाग की भी सभा की ओर से एक एक शाखा

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

खोल दें। जिससे उनके उद्देश्यों की पूर्ति शीघ्र हो सकेगी, धर्म-प्रचार सुलभ होगा और सभा की सम्पत्ति की वृद्धि भी होगी। हर एक शाखा हमें दो प्रकार से सहायता पहुँचा सकती है। (१) हमारी ग्रन्थमाला के स्थिरग्राहक बना कर, और (२) ग्रन्थमाला की तथा इस विभाग द्वारा प्रकाशित अन्यान्य पुस्तकों की फुटकर बिक्री कर। दोनों प्रकार की सहायता पहुँचानेवाली सभाओं को आर्थिक सहायता दी जायगी। हमारी सभाओं के मंत्री इस प्रकार की शाखा खोलने के लिये पत्र द्वारा आवेदन करें तो उन्हें सहर्ष अनुमति और सहायता दी जायगी एवम् इस प्रकार से जो सभाएँ रजिस्टर दर्ज होंगी, उनके पास फार्म आदि नियमित समय पर पहुँच जायँगे।

स्थिर ग्राहकों के नियम।

इस समय हमारी ग्रन्थमाला में निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

मंत्रयोगसंहिता भाषानुवाद सहित	१)
भक्तिदर्शन भाषाभाष्य सहित	१)
योगदर्शन भाषाभाष्य सहित	२)
नवीन दृष्टि में प्रवीण भारत	१)
कल्किपुराण भाषानुवाद सहित	१)
उपदेश पारिजात (संस्कृत)	॥)
भारतधर्ममहामण्डल रहस्य	१)
गीतावली	॥)
धर्मकल्पद्रुम प्रथम खण्ड	२)

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

धर्म्म कल्पद्रुम द्वितीय खण्ड	१॥)
धर्म्म कल्पद्रुम तृतीय खण्ड	२)
धर्म्म कल्पद्रुम चतुर्थ खण्ड	२)
संन्यासगीता भाषानुवाद सहित	॥।)
दैवीमीमांसा प्रथम खण्ड भाषा भाष्य सहित	१॥)

इनमें से जो कम से कम ४) मूल्य की पुस्तकें खरीदेंगे अथवा स्थिर ग्राहक होने का चन्दा १) भेज देंगे, उन्हें शेष और आगे प्रकाशित होने वाली सब पुस्तकें ¾ मूल्य में दी जायंगी।

स्थिर ग्राहकों को माला में ग्रथित होनेवाली हर एक पुस्तक खरीदनी होगी। जो पुस्तक इस विभाग द्वारा छापीजायगी, वह एक विद्वानों की कमेटी द्वारा पसन्द करा ली जायगी।

हर एक ग्राहक अपना नम्बर लिखकर या दिखाकर हमारे कार्यालय से, अथवा जहां वह रहता हो वहां हमारी सभा हो तो वहां से, स्वल्प मूल्य पर पुस्तकें खरीद सकेगा।

जो धर्म्मसभा इस धर्म्मकार्य्य में सहायता करना चाहे और जो सज्जन इस ग्रन्थमाला के स्थायी ग्राहक होना चाहें वे मेरे नाम पत्र भेजने की कृपा करें।

गोविन्द शास्त्री दुगवेकर,

सहकारि अध्यक्ष शास्त्रप्रकाश विभाग।

श्रीभारतधर्ममहामण्डल प्रधान कार्य्यालय,

जगत्‌गंज, बनारस।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

श्रीविश्वनाथ अन्नपूर्णा दानभाण्डार।

श्रीभारतधर्म्ममहामण्डल प्रधान कार्य्यालय काशी में दीन दुःखियों के क्लेशनिवारणार्थ यह सभा स्थापित की गई है। इस सभा के द्वारा अतिविस्तृत रीति पर शास्त्रप्रकाश का कार्य्य प्रारम्भ किया गया है। इस सभा द्वारा धर्म्मपुस्तिका पुस्तकादि यथासम्भव रीति पर विना मूल्य वितरण करने का भी विचार रक्खा गया है। दानभाण्डार के द्वारा तत्त्ववोध, साधुओं का कर्त्तव्य, धर्म्म और धर्म्माङ्ग, दानधर्म्म, महामण्डल की आवश्यकता आदि कई एक हिन्दी भाषा के धर्म्मग्रन्थ और अंग्रेजी भाषा के कई एक ट्रैक्ट विना मूल्य योग्यपात्रों को बांटे जाते हैं। पत्राचार करने पर विदित हो सकेगा। शास्त्रप्रकाश की आमदनी इसी दानभाण्डार में दीन दुःखियों के दुःखमोचनार्थ व्यय की जाती है। इस सभा में जो दान करना चाहें या किसी प्रकार का पत्राचार करना चाहें वे निम्नलिखित पते पर पत्र भेजें।

सेक्रेटरी—
श्रीविश्वनाथ अन्नपूर्णा दानभाण्डार,
श्रीभारतधर्म्ममहामण्डल प्रधान कार्य्यालय,
हरिधाम जगत्गंज,
बनारस (छावनी).

तत्त्ववोध। इस ग्रन्थ रत्नका बंगानुवाद भी प्रकाशित हो चुका है। मूल्य ≈) दो आना।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

श्रीभारतधर्म्म महामण्डल
के
सभ्यगण और मुखपत्र।

श्रीभारतधर्म्ममहामण्डल प्रधान कार्य्यालय काशी से एक हिन्दी भाषा का और दूसरा अंग्रेज़ी भाषा का इस प्रकार दो मासिकपत्र प्रकाशित होते हैं। एवं श्रीमहामण्डल के अन्यान्य भाषाओं के मुखपत्र श्रीमहामण्डल के प्रान्तीय कार्य्यालयों से प्रकाशित होते हैं। यथाः—कलकत्ते के कार्य्यालय से बङ्गलाभाषा का मुखपत्र, फ़ीरोज़पुर (पञ्जाब) के कार्य्यालय से उर्दूभाषा का मुखपत्र और मेरठ के कार्य्यालय से हिन्दीभाषा का मुखपत्र इत्यादि।

श्रीमहामण्डल के पांच श्रेणी के सभ्य होते हैं। यथाः— स्वाधीन नरपति और प्रधान प्रधान धर्म्माचार्य्यगण संरक्षक होते हैं। भारतवर्ष के सब प्रान्तों के बड़े बड़े ज़मींदार सेठ साहूकार आदि सामाजिक नेतागण उस उस प्रान्त के चुनाव के द्वारा प्रतिनिधि सभ्य चुने जाते हैं। प्रत्येक प्रान्त के अध्यापक ब्राह्मणगण में से उस उस प्रान्तीय मण्डलद्वारा चुने जाकर धर्म्मव्यवस्थापक सभ्य बनाये जाते हैं। भारतवर्ष के सब प्रान्तों से पांच प्रकार के सहायक सभ्य लिये जाते हैं; विद्यासम्बन्धीय सहायक सभ्य, धर्म्मकार्य्य करनेवाले सहायक सभ्य, महामण्डल प्रान्तीय मण्डल और शाखासभाओं को धनदान करनेवाले सहायक सभ्य, विद्वान् ब्राह्मण सहायक सभ्य और साधु संन्यासी सहायक सभ्य एवं पांचवीं श्रेणी के सभ्य साधारण सभ्य होते हैं जो हिन्दूमात्र हो सक्ते हैं। हिन्दू कुलकामिनीगण केवल सहायक सभ्य और साधारण सभ्य हो सक्ती हैं।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

इन सब प्रकार के सभ्यों और श्रीमहामण्डल के प्रान्तीय मण्डल, शाखासभा और संयुक्त सभाओं को श्रीमहामण्डल का हिन्दी अथवा अंग्रेज़ी मासिक पत्र विना मूल्य दिया जाता है। नियमित रूप से नियत वार्षिक चन्दा २) देने पर हिन्दू नर-नारी साधारण सभ्य हो सक्ते हैं। सभ्य होने के लिये निम्नलिखित पते पर पत्राचार करें। साधारण सभ्यों को विना मूल्य मासिक पत्रिका के अतिरिक्त शास्त्र विभाग से प्रकाशित ग्रन्थ समूह स्वल्प मूल्य में तथा समाज हितकारी कोष के द्वारा उन के उत्तराधिकारियों को विशेष लाभ मिलता है।

प्रधानाध्यक्षः—

श्रीभारतधर्म्ममहामण्डल प्रधान कार्य्यालय,

महामण्डलभवन जगत्गंज, बनारस.

उपदेशकमहाविद्यालय ।

श्रीभारतधर्म्ममहामण्डल प्रधान कार्य्यालय काशी में साधु और गृहस्थ धर्म्मवक्ता प्रस्तुत करने के अर्थ श्रीमहामण्डल उपदेशक महाविद्यालयनामक विद्यालय स्थापन हुआहै। जो साधुगण दार्शनिक और धर्म्मसम्बन्धीय ज्ञान लाभ करके अपने साधु जीवन को कृतकृत्य करना चाहें और जो गृहस्थ विद्वान् धार्मिक शिक्षा लाभ करके धर्म्मप्रचार द्वारा देश की सेवा करते हुए अपना जीवन निर्व्वाह करना चाहें वे निम्नलिखित पते पर पत्र भेजें।

प्रधानाध्यक्ष—

श्रीभारतधर्म्ममहामण्डल प्रधान कार्य्यालय,

हरिधाम जगत्गंज, बनारस (छावनी).

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

THE ARYAN BUREAU OF SEERS AND SAVANTS.

ESTABLISHED UNDER THE DISTINGUISHED PATRONAGE OF THE LEADERS OF

SRI BHARAT DHARMA MAHAMANDAL.

It is in contemplation to form a Committee (Bureau) with the object, amongst others, of establishing a connecting link, through the vehicle of correspondence, with those Scholars and Literary Societies that take an interest in questions of Theology, Hindu Philosophy and Sanskrit Literature all over the civilised world.

To fulfil the above objects the Bureau intends to take up the following:—

1. To receive and answer questions through *bonâ fide* correspondence regarding Hindu Religion and Science, Codes, Practical Yoga, Vaidic Philosophy and General Sanskrit Literature.

2. To exhibit to the enlightened world the catholicity of the Vaidic doctrines, and its fostering agency as universal helper towards moral and spiritual amelioration of nations.

3. To render mutual help as regards comparative research in Science, Philosophy and Literatures, both Oriental and Occidental.

4. To welcome such suggestions as may emanate from learned sources all over the world conducive to the improvement and benefit of humanity.

5. And to do such other things that may lead to the fulfilment of the above objects or any of them.

All correspondence to be addressed to—

SWAMI DAYANAND, SECRETARY,

Aryan Bureau of Seers and Savants,

C/o Sri Mahamandal Office, BENARES CANTT. (India).

N.-B.—Oriental scholars, all over the world, are invited to send their names and addresses to facilitate mutual communication and despatch of necessary papers.

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri